प्रवेशांक
जनवरी – अप्रैल 2026

साहित्य संवहन की चौमासा

कर्मणा

SCAN ME

- **गोरखनाथ की भाषा :** परिचय दास
- **इस्मत चुगताई का कथा-संसार और स्त्रियां :** सीमा संगसार
- **कहानी :** अनिरुद्ध प्रसाद विमल, रमेश चंद्र , नारायण झा • **नाटक :** अश्विनी कुमार आलोक

एक जन्म में
मुझे आना था समुद्र के रूप में
मैं बादल के रूप में आया
हालाँकि बादल के रूप में आया
समुद्र ही के कारण

अगले जन्म में
मुझे चिड़िया के रूप में आना था
मैं फूल के रूप में आ गया
हालाँकि फूल के रूप में आया
चिड़िया ही के कारण

इस जन्म में
मुझे मनुष्य के रूप में आना था
मैं आया मनुष्य ही के रूप में
हालाँकि मनुष्य के रूप में आया
समुद्र ,फूल
और चिड़िया ही के कारण...

संजय शांडिल्य

टीचर्स ऑफ बिहार

शेफालिका

हिंदी और मैथिली की प्रखर और ओजस्वी कवयित्री। छंद पर गहरी पकड़। स्तरीय मंचों पर शिरकत

संपर्क : विद्यालय अध्यापक (1-5), नवसृजित प्राथमिक विद्यालय धरहर, पतरघट, सहरसा

एक : सृष्टि की अद्भुत अलौकिक अनुपमा अनुभूति है यह,
हिमशिखर सा उच्च है तो सिंधु सा गहरा प्रणय है।

श्वास संदल-सी सुवासित, राह प्रियतम की बुहारे,
व्यग्र हैं नित ओठ कोमल, भुज प्रतीक्षारत पुकारे।
श्याम कुंतल बन के घन, जब नेह का अनुप्रास भरती,
वेदना तब प्रेम के क्षण का, सदा उपहास करती।
मन जनकपुर, तन अवध से कर रहा अनुनय विनय है।

द्वार पर दीपक सरीखे, प्रज्ज्वलित दो नैन ठहरे,
आस की बाती सुलगती, दे रही दिन रात पहरे।
कामना करती कभी, विश्वास लौ मद्धम न होगी,
दूर रहने से कभी, अनुरक्ति अपनी कम न होगी।
योजनों की दूरियाँ, मन कर रहा अब नित्य तय है।

व्योम वसुधा से मिलन की, चाह में व्याकुल विनत है,
और शशि की चाह में, आकुल चकोरी अनवरत है।
दे बता कोई नदी के, दो किनारे मिल सके क्या,
दोपहर में पुष्प प्राजक्ता, किसी दिन खिल सके क्या?
एषणा की अंबुनिधि में, वेदना का तीव्र क्षय है।

प्रेम में हो जीत या फिर हार, सब स्वीकार कर लूँ,
भाग्य-रेखा के रचयिता, ईश का आभार कर लूँ।
प्रेम की परिणीति में, बाधक कभी बनती न दूरी,
राधिके बिन कृष्ण आधा , कृष्ण बिन राधा अधूरी।
प्रेम में 'तुम और मैं' का हो रहा अद्भुत विलय है।

दो : जो गया बीत उसपर न होनाव्यथित,
पाठ अब जिंदगी का नया तुम पढ़ो।
दृढ़ प्रतिज्ञा करो और आगे बढ़ो।

चाह आवाज देकर बुलाती रही,
पर नियति भी हमेशा रुलाती रही,
भाग्य रेखा भले आजमाती रही।
हस्तरेखा नई तुम स्वयं ही गढ़ो।
दृढ़ प्रतिज्ञा करो और आगे बढ़ो।।

हास-परिहास पर रूष्ट होना नहीं,
व्यर्थ की बात पर धैर्य खोना नहीं,
पूर्ण जब तक न हो स्वप्न, सोना नहीं।
दोष अपने, किसी अन्य पर मत मढ़ो।
दृढ़ प्रतिज्ञा करो और आगे बढ़ो।।

साध कर बाण अर्जुन खड़े जिस तरह,
मीन पर नैन स्थिर थे अड़े जिस तरह ,
वीर अभिमन्यु रण में लड़े जिस तरह।
हो सुगम राह नित शीर्ष पर तुम चढ़ो।
दृढ़ प्रतिज्ञा करो और आगे बढ़ो।।

झरोखा

संपादकीय 04

आलेख

गोरखनाथ की भाषा : अनुभव का रूपांतरण या प्रतिरोध
- परिचय दास / 05

इस्मत चुग़ताई का कथा संसार और स्त्रियाँ
- सीमा संगसार / 09

कहानी

झानो - अनिरुद्ध प्रसाद विमल/ 11

दरकती दीवारें - रमेश चन्द्र / 14

एक्कैसम सदीक मानसिकता (मैथिली) - नारायण झा /18

लघुकथा

इंटरनेट – मुकेश कुमार मृदुल / 13

कविता

गीत : शेफालिका / 02 , रंजन कुमार झा / 24, (बज्जिका) – अखौरी चन्द्रशेखर / 40 **गजलें** : कुमार राहुल / 22, **दोहे** : राम किशोर पाठक / 31 , **कविता** : निधि चौधरी / 23 **, आवरण कविता** : संजय शांडिल्य

नाटक

सलहेस – अश्विनी कुमार आलोक / 25

समीक्षा

(कहवा घर : सीमा संगसार)

प्रेम की लेखनी से स्त्री के अतरंग संसार की कहानी – सुरेन्द्र रघुवंशी / 33

(वेदना की उड़ान : चाँदनी समर)

वस्तुस्थिति के विरुद्ध नारी की अस्मिता – रामेश्वर द्विवेदी / 36

साहित्य-संवहन की चौमासा

कर्मणा

जनवरी–अप्रैल 2026

प्रवेशांक

संरक्षक

डॉ चंदन श्रीवास्तव

सहायक आचार्य, काशी हिंदी विश्वविद्यालय

शिव कुमार

संस्थापक, टीचर्स ऑफ बिहार

शिवेंद्र प्रकाश सुमन

तकनीकी प्रमुख, टीचर्स ऑफ बिहार

संपादक

मुकेश कुमार मृदुल

विद्यालय अध्यापक (11-12)

उच्च माध्यमिक विद्यालय दिघरा, पूसा, समस्तीपुर

मोबाइल – 9939460183

ईमेल - karmna@teachersofbihar.org

संपादक-मंडल

डॉ विनोद कुमार उपाध्याय, कुमार संभव, सुधांशु कुमार चक्रवर्ती, गगन कुमार, चाँदनी समर, पुष्पा प्रसाद

रेखांकन : संदीप राशिनकर

अर्थात्

मशीन उत्पादन कर सकती है, सृजन नहीं। सृजन करने की क्षमता चेतनशील प्राणी में होती है; क्योंकि वह संवेदनाओं से परिपूर्ण होता है। उसमें परिवेश और परिस्थिति को महसूस करने की क्षमता होती है। इसलिए यह कहना अनुचित नहीं होगा कि एआई साहित्य नहीं रच सकता है। वह जो रच रहा है, वह व्यक्ति द्वारा दिये गये आदेश के अनुरूप पाठ होता है। वह पाठ भी उसमें पहले से किये गये प्रोग्रामिंग के आधार पर ही तैयार होता है। उसमें खुद से कुछ भी अभिव्यक्त करने की क्षमता नहीं होती है। एआई रचनाओं को नवीन और कलात्मक स्वरूपों से सुसज्जित नहीं कर सकता। हाँ, यह सृजन के दौरान शब्दों के चयन, वाक्यों के गठन आदि में कुछ हद तक हमें मदद भर कर सकता है। एआई की रचना को हम उसी कोटि में रख सकते हैं, जिस कोटि में 'पैरोडी' आती है। कुछ लोगों का यह कहना है कि एआई को लगातार विकसित किया जा रहा है और वह मनुष्य के सभी गुणों एवं क्षमताओं से परिपूर्ण हो जाएगा। अगर ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं, तो क्या जीवन की जरूरत रह जाएगी ? साहित्य, जीवन का सौंदर्य है। जिसको परखकर प्रकट करने के लिए गहन अनुभूति और चेतना की आवश्यकता होती है। उसी से सृजन कलात्मक स्वरूप ग्रहण करता है। एआई, व्यक्ति द्वारा निर्मित किये जाते हैं। यह सुविधाओं के लिए व्यक्ति का एक सृजन है। यह दैनिक जीवन के लिए उपयोगी तो हो सकता है ,पर प्रकृति में प्रतिस्थापित नहीं हो सकता। जीवन प्रकृतिगत होता है। वर्तमान दौर में विपुल संख्या में अच्छे साहित्य का सृजन किया जा रहा है। सर्वत्र साहित्य खरीदा और बेचा भी जा रहा है। घर – घर तक उपलब्धता के साधन मौजूद हैं। हमें एआई द्वारा रचित पाठ पर सिमटने की जरूरत नहीं है। हाँ, एआई की मदद से जहाँ भी, जब चाहें साहित्यिक रचनाओं के पाठ को सुगमता से प्राप्त करने का आनंद उठा सकते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि एआई से ही हम सृजन करवाने लगें। उसके सृजन को साहित्य मान लें और अपनी प्रतिभा को निखारने का प्रयत्न ही न करें। अपने से अधिक उस पर भरोसा करने लगें और संतुष्ट हो जायें।

टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा 'कर्मणा' का प्रकाशन उन प्रज्ञावान साहित्य-साधकों की रचनाओं को एक मंच पर लाने के लिए किया गया है, जिन्होंने अपनी वृत्ति के रूप में शिक्षण कर्म का चयन किया है। भावी पीढ़ियों में ज्ञान की ज्योति जलाने के लिए अनवरत तत्पर रहने वाले माँ भारती के उन सपूतों द्वारा साहित्य की साधना लगातार की जा रही है। बिहार प्रदेश के उन समस्त सर्जकों की सर्जना को हम प्रस्तुत कर यह बताना चाहेंगे कि शिक्षक अपने सामान्य कर्म को केवल अपनी प्रखर प्रज्ञा से सींचते ही नहीं, बल्कि उसके अतिरिक्त जीवन और जगत् की सौन्दर्य – सुगंधों को युग – युगांतर के लिए सहेजते – संवारते भी रहते हैं।

अंक कैसा लगा ? आप हमें बेहिचक लिखेंगे।

गोरखनाथ की भाषा : अनुभव का रूपांतरण या प्रतिरोध

परिचय दास

गोरखनाथ की भाषा कोई सामान्य भाषा नहीं है। वह अनुभव की मिट्टी से निकली हुई, असंख्य अस्मिताओं से रगड़ खाई हुई, आंतरिक ताप और अनवरत जिज्ञासा से तपकर बनी एक आत्मभाषा है—जो बोलने से पहले सुनती है जो कहने से अधिक जानने का यत्न करती है। वह भाषा जिसे गढ़ा नहीं गया, बल्कि वह स्वयं गढ़ती गई अपने साधक को—हर बार, जब उसने मौन को स्पर्श किया। गोरखनाथ की वाणी केवल कहने का उपक्रम नहीं है, वह एक उपस्थिति है जो चेतना के तल पर घटती है, जहाँ शब्द बहुधा मौन के माध्यम से संवाद करते हैं। उस भाषा को समझना, अनुभव के उस तल तक पहुँचना है जहाँ सामान्य तर्क और पांडित्य की सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं।

गोरखनाथ के पदों में भाषा ऐसे फटकारती है जैसे भीतर कोई खलल करता हो—जैसे कोई लहर आत्मा को झिंझोड़ती हो। वहाँ शब्द 'साधना' का पर्याय नहीं, उसकी छाया हैं। वह छाया जो आत्मा पर पड़ती है तब, जब वह अपने भीतर उतरती है और वहां उसे केवल स्वयं का अनुग्रह नहीं मिलता, एक असहनीय निर्वात भी मिलता है। गोरखनाथ उस निर्वात की भाषा रचते हैं। वह जो भरा हुआ नहीं, बल्कि रिक्त है। गोरखनाथ की भाषा उस विरलता की भाषा है जो भीड़ में नहीं गूँजती, वह अपनी पूर्णता में तब प्रकट होती है जब साधक अकेला हो जाता है—भीतर तक।

इस भाषा में प्रश्न हैं किंतु वे सामान्य अर्थों में प्रश्न नहीं हैं। वे अस्तित्व के द्वार पर खड़े हुए आह्वान हैं। उनकी सबदी व्याकरण नहीं, चेतना का झटका है। यह जीवन के स्थूलपन पर पड़ी हुई एक चेतावनी है। इस एक पंक्ति में वह सब कुछ है जो हमारी समयबद्ध और पदार्थ-केंद्रित दृष्टि पर सवाल उठाती है। यह कोई उपदेश नहीं, न ही कोई तर्कसंगत विमर्श—यह एक काव्यात्मक आघात है, जो पाठक के अनुभव-क्षेत्र को भीतर से आंदोलित करता है।

गोरखनाथ की भाषा अपने समय की भाषा नहीं है। वह समय के विरुद्ध भी नहीं है। वह समय को पार कर जाने की आकांक्षा से जन्मी है। इसीलिए उसके पद वर्तमान के किसी भी आलोचनात्मक ढाँचे में पूरी तरह फिट नहीं बैठते। वे आधुनिकता के औजारों से नापे नहीं जा सकते और परंपरा की सीमाओं में बाँधे नहीं जा सकते। यह भाषा ठहराव की नहीं, आत्म-अन्वेषण की है। यह भाषा है जो जल की तरह बहती है, पर जल की तरह पारदर्शी नहीं—वह चित्त के तल पर जाकर वहाँ हलचल मचाती है। यह भाषा कुएँ की नहीं, समुद्र की

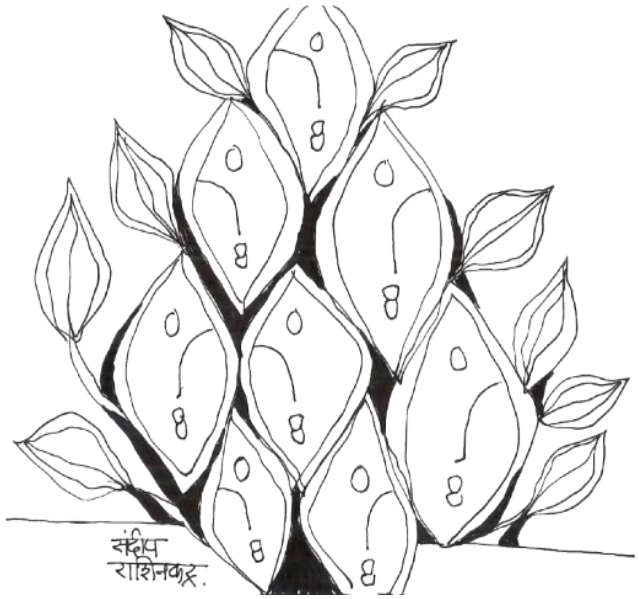

है; उसकी गहराई नापने का प्रयास एक जोखिम है और उसी में उसका आकर्षण भी।

इस भाषा में शिल्प है, पर वह शिल्प जान-बूझकर गढ़ा नहीं गया । वह साधना की प्रक्रिया से स्वतः जन्मा हुआ शिल्प है। उसमें छंद हैं, पर वे लय की आज्ञा नहीं मानते । वे उस अनुभूति की धड़कन पर चलते हैं जो शरीर से नहीं, साधना से संचालित होती है। यह भाषा आंतरिक हो उठती है—कभी उपहास की तरह, कभी आग की तरह, कभी प्रश्नचिह्न की तरह और कभी एकदम शून्य की तरह। यह भाषा हमें अटकाती है, और उसी अटकाव में हम अपने भीतर झाँकते हैं।

परिचय दास

सुप्रसिद्ध लेखक, निबंधकार, कवि, आलोचक, संस्कृतिकर्मी, अनेक पत्रिकाओं के संपादक, कई पुस्तकें प्रकाशित।

संपर्क : हिंदी विभागाध्यक्ष, नव नालंदा महाविहार डीम्ड विश्वविद्यालय, नालंदा

गोरखनाथ की भाषा केवल 'कहने' की प्रक्रिया नहीं है; वह स्वयं एक 'प्रवेश' है—एक द्वार, एक गर्त, एक सुरंग, जहाँ से गुजरने पर मनुष्य फिर पहले जैसा नहीं रह जाता। यह भाषा रूपांतरण की नहीं, रूपांतरण की प्रक्रिया का प्रत्यक्ष अनुभव है। वह पाठक को साधक बनाती है, श्रोता को साक्षी में बदल देती है। वह पूछती नहीं, केवल उपस्थित हो जाती है और उपस्थिति की यह ताक़त इतनी गहन है कि वह आत्मा के सबसे चुप कोने को भी जगा देती है।

उस भाषा में न तो संतोष है और न ही असंतोष—केवल एक असहनीय खिंचाव है, जो मनुष्य को उसके मूल की ओर खींचता है। वह मूल जहाँ कोई उत्तर नहीं, केवल मौन है। गोरखनाथ की भाषा उस मौन की दहलीज़ पर बैठी वह अनुभूति है, जो स्वयं को शब्दों में प्रकट करते-करते भी अपूर्ण रह जाती है—और उसी अपूर्णता में पूर्ण प्रतीत होती है।

गोरखनाथ की भाषा को केवल आंतरिक साधना और अद्वैत-प्रवृत्त आत्मानुभव की भाषा कह देना उसके एक पक्ष को ही उजागर करना है। उसका एक दूसरा पक्ष—जो उतना ही मौलिक, उतना ही जीवंत है—वह है प्रतिरोध और विखंडन का। गोरखनाथ की वाणी केवल आत्मा की ऊर्ध्व गति का सूचक नहीं है, वह सामाजिक नियंताओं की दीवारों पर भी चोट करती है। यह वह भाषा है जो जमी-जमाई धार्मिकता, कर्मकांड और पाखंडी साधु-संस्कृति पर खिंचती है, उसे उलटती है, प्रश्न करती है और कभी-कभी मुँह चिढ़ाती है। गोरखनाथ की यह भाषा सिर्फ आध्यात्मिक नहीं, ऐंद्रिक भी है—उसमें जीवन की लपट है, देह की आग है, भूख की अनसुनी थरथराहट है।

जब वह कहते हैं—"मच्छिन्द्र मत लाग्यो पारा"—तो यह एक परंपरा के भीतर से उपजी असहमति है, एक ऐसी वाणी जो अपने ही आचार्य से मतांतर करती है। यहाँ कोई भक्तिपरक भक्ति नहीं, यहाँ एक स्वतंत्र चेतना है जो अपनी राह स्वयं बनाती है जो गुरु को मानती है पर गुरु के मत को अंतिम नहीं मानती। यही वह साहस है जो गोरखनाथ की भाषा को तात्त्विक आत्मकथ्य से आगे ले जाकर एक सामाजिक वक्तव्य में बदल देता है। वे शिष्य नहीं, एक उत्तर-गुरु हैं। वे उसी परंपरा के भीतर रहते हुए, उसके मूल तत्वों का पुनर्लेखन करते हैं—जैसे कोई स्थापत्यशास्त्री पुराने पत्थरों को नष्ट नहीं करता बल्कि उनसे एक नया मंदिर बनाता है जिसमें विधियों का पुनरर्थांकन हो।

उनकी भाषा जन-भाषा है—वह राजभाषा नहीं, पांडित्य की भाषा नहीं, बल्कि उन लोकों की है जहाँ शब्द खेतों में जन्मते हैं और मन में पकते हैं। वह भाषा कभी भी चमत्कारी नहीं बनना चाहती, वह सहज होना चाहती है। गोरखनाथ 'हठयोग' का उद्घोषक होते हुए भी हठ को केवल शरीर पर केंद्रित नहीं रखते—वे सामाजिक और भाषिक व्यवस्था के विरुद्ध भी एक हठ की रचना करते हैं। यह हठ एक प्रकार का 'लोकतांत्रिक तप' है, जहाँ साधक ब्रह्म से अधिक ब्रह्म की निगरानी करने वाली संस्थाओं पर प्रश्न करता है।

"का मरै का जीयै, का बोलै का खाय?"—यह प्रश्न केवल आध्यात्मिक नहीं, यह उस व्यवस्था पर चोट है जो शरीर और आत्मा को बाँटकर शासन करना चाहती है। यह भाषा उस विभाजन को नहीं स्वीकारती। वह देह को द्वार मानती है, और आत्मा को उसका यात्री। और यही वह दुस्साहस है जो उसे परंपरा में रहते हुए भी परंपरा का संशोधक बना देता है।

> आज जब भाषा या तो विज्ञापन बन गई है या विमर्श का छद्म, तब गोरखनाथ की वाणी उस असंभव ईमानदारी की तरह लगती है, जो न किसी प्रबंधन की भाषा है, न किसी पंथ की प्रवक्ता। यह न संत की भाषा है, न विद्रोही की—बल्कि यह उन दोनों के बीच की वह रेखा है जिस पर चलना मनुष्य के लिए एक जोखिम भी है और एक मुक्ति भी।

गोरखनाथ की यह भाषा स्त्री के प्रश्न से भी मुँह नहीं मोड़ती। वहाँ स्त्री केवल देह नहीं, वह एक अवस्था है—जिससे साधक को संघर्ष करना है, संवाद करना है, और पार भी जाना है। यह भाषा स्त्री की कामनाओं को रेखांकित करती है, न कि उन्हें नकारती है। यहाँ कोई अति नैतिकता नहीं, बल्कि अनुभव की स्वीकृति है—जैसे कोई नदी जो पहाड़ों से होकर, रेतीले मैदानों से होकर, अंततः समंदर में मिलती है और फिर भी अपनी पहचान नहीं खोती।

गोरखनाथ की भाषा में जो व्यंग्य है, वह किसी 'व्यक्तिगत' विद्वेष से नहीं उपजता, बल्कि उस ऐतिहासिक निराशा से पैदा होता है जिसमें मनुष्य को बार-बार एक मुक्ति का भ्रम दिया गया, पर वह मुक्ति कभी भी उसकी देह, उसकी भूख, उसकी जात, उसकी आकांक्षाओं तक नहीं पहुँची। वह भाषा एक काव्यात्मक विस्फोट है जो किसी धर्म के विरुद्ध नहीं, धर्म के नाम पर खड़ी की गई दीवारों के विरुद्ध है।

इस भाषा में हास्य भी है, व्यंग्य भी, विडंबना भी, करुणा भी। यह भाषा किसी एक 'भाव' में नहीं ठहरती, वह एक 'भाव-संघात' है—एक ऐसी टकराहट जहाँ अर्थ स्थिर नहीं रहते, लगातार फिसलते रहते हैं और पाठक या श्रोता को बाध्य करते हैं कि वह स्थिर निष्कर्ष की लालसा छोड़ दे।

यह भाषा केवल अनुभव की नहीं, प्रयोग की भी है। यह भाषा रचती है—शब्दों को, प्रतीकों को, संवादों को, शिल्प को। वह स्वयं अपना व्याकरण है, स्वयं अपना अपवाद। वह भाषा जो अंधकार को भी शब्द देती है और ज्योति को भी संशय के घेरे में खड़ा करती है।

गोरखनाथ की भाषा हमें न केवल भीतर ले जाती है, वह हमें बाहर भी फेंक देती है—एक ऐसे संसार में, जहाँ पुनः भाषा की ज़रूरत है, लेकिन वह भाषा अब तक की किसी भी ज्ञात भाषा से अलग होगी। यह भाषा एक चुनौती है—सिर्फ साहित्यिक नहीं, बल्कि अस्तित्व की ।

गोरखनाथ की भाषा समकाल में एक अद्भुत चुप्पी के बीच एक बोलती हुई पुकार की तरह उपस्थित होती है।

यह वह भाषा है जिसे आज की शोरगुल और औपचारिकता में दबा देने की कोशिश की गई है फिर भी वह कहीं भीतर बजती रहती है—सदियों पुरानी बांसुरी की तरह, जिसकी धुन पुरानी होकर भी नई है। यह भाषा आज के पाठक को उस रिक्त स्थान की याद दिलाती है जिसे वह जानबूझकर अनदेखा करता रहा है। आज जब भाषा या तो विज्ञापन बन गई है या विमर्श का छद्म, तब गोरखनाथ की वाणी उस असंभव ईमानदारी की तरह लगती है, जो न किसी प्रबंधन की भाषा है, न किसी पंथ की प्रवक्ता। यह न संत की भाषा है, न विद्रोही की—बल्कि यह उन दोनों के बीच की वह रेखा है जिस पर चलना मनुष्य के लिए एक जोखिम भी है और एक मुक्ति भी।

समकालीन बौद्धिकता में जहाँ भाषाएँ अक्सर वर्ग, जाति, लिंग और सत्ता के पर्यायवाची रूपों में उलझी रहती हैं, वहाँ गोरखनाथ की भाषा इन समस्त ढाँचों को उलटकर रख देती है। वह सीधे उस मूल पर प्रश्न करती है जहाँ से ये सारी व्यवस्थाएँ जन्म लेती हैं। वह किसी 'इज़्म' की भाषा नहीं, बल्कि अनुभव और अंतर्दृष्टि की भाषा है—जिसे कोई वाम, कोई दक्षिण, कोई मध्यमार्ग नहीं बाँध सकता। आज जब कवि आत्म-प्रदर्शन में व्यस्त हैं और आलोचक पद्धतियों के कुहासे में, गोरखनाथ की वाणी किसी प्राचीन वन की तरह सामने आती है—जहाँ कोई रास्ता नहीं दिखता पर चलते जाने से रास्ता बनता है। उनकी भाषा आज के लिए 'पुरानी' नहीं है, वह आज की भाषा के खोखलेपन पर सबसे तीखा कटाक्ष है।

गोरखनाथ की वाणी समकालीनता को बाहरी आवरण नहीं, भीतरी आकुलता से मापती है। वह न तकनीक में रुचि रखती है, न तकनीक से उपजी अभिव्यक्ति में। उसका आग्रह उस मानवीय स्थिति पर है जहाँ मनुष्य को ईश्वर से पहले अपने 'स्व' को जानना है। वह किसी विमर्श का हिस्सा नहीं बनती, वह स्वयं एक जीवित विमर्श है, जिसे आज का समय अक्सर असुविधाजनक मानकर दरकिनार करता है।

इस वाणी में कोई सत्तात्मक शैली नहीं है। उसमें आदेश नहीं हैं, संवाद है—कभी-कभी खुरदरा, कभी ठिठकता हुआ, पर हर बार दिल से निकला हुआ। यह समकालीन विमर्श की उस भाषा के विरुद्ध खड़ी है जो तथ्यों की भाषा बन चुकी है, लेकिन सत्य की नहीं।

गोरखनाथ की भाषा समकालीनता में आकर सवाल पूछती है—तुम इतने सारे विमर्शों में डूबे हो, लेकिन स्वयं को कहाँ छोड़ा? तुमने कितनी भाषा अर्जित की लेकिन कितनी भाषा भीतर सुनी? वह आज के मनुष्य से आग्रह नहीं करती कि वह किसी दर्शन को अपनाए, वह बस इतना कहती है—सुन और यदि सुन ले तो मौन में उतर जा। आज जब मौन भी एक फैशन हो गया है, तब गोरखनाथ का मौन एक पुकार है—जो तुम्हें तुम्हारे भीतर से बाहर तक खींच लाता है।

इस प्रकार, गोरखनाथ की भाषा न तो पुरानी है, न नई। वह एक चिरंतन संवाद है—जिसे समकालीनता बार-बार टालती है, लेकिन हर पीढ़ी में कोई-न-कोई साधक उसे फिर से सुनता है और उसे जीता है—भाषा से परे, भाषा में होकर भी।

इस्मत चुग़ताई का कथा-संसार और स्त्रियाँ

सीमा संगसार

मंटो की समकालीन इस्मत चुगताई, जिन्हें हम प्यार से आपा कहते हैं, भारतीय साहित्य में गंगा-जमुनी तहजीब की अद्भुत मिसाल हैं। कथाकारों की श्रेणी में ये अव्वल दर्जे की मानी जाती हैं । उर्दू जो हमारी मातृभाषा की सहोदरी भाषा मानी जाती है, इनकी कलम इनकी मादरी भाषा में चली और पूरी तरह से हिन्दुस्तान की होकर रह गयी। इन्हें अपने वतन से बेपनाह मुहब्बत थी, इसलिए लाखों जुल्म सहने के बावजूद भी ये हिन्दुस्तान में टिकी रहीं और साहित्य सृजन करती रहीं।

अपनी आत्मकथा 'कागजी है पैरहन' में आपा कहती हैं कि जब भी वे कहानी के पेंच में फँस जाती थीं कि कहाँ से शुरू करें और कहाँ खत्म करें, तो वे चेखव को पढ़ती थीं और उनकी कलम धाराप्रवाह चलने लगती थी। मैं समकालीन साहित्यकारों से यही बात कहूँगी कि वे कथाकारों में मंटो और इस्मत चुगताई को अवश्य पढ़ें। इनकी कहानियों में जो बुनावट और कसावट है, वह आज की कहानियों में कमतर है। आज कई यहाँयाँ कहानियों को पढ़ने वक्त इतने झोल नजर आते हैं कि कहानियां कहीं भी लुढकती नजर आती हैं।

बीसवीं सदी के आरंभ में ही कहानियां लिखने वाली आपा अपने समय से कहीं आगे थीं। करीब पचास - सौ साल के बाद भी इनकी कहानियों में जो कथन हैं, वह ताजा – टटका मालूम पड़ते हैं।

समलैंगिकता जैसे मुद्दे को अपनी कहानियों में पिरोने वाली आपा अपने समय से मुठभेड़ करती नजर आती हैं। भले इतने दशक के बाद सुप्रीम कोर्ट ने यह फैसला दिया कि समलैंगिकता कोई अपराध नहीं है। समलैंगिकता, हमारे समाज में सदियों से व्याप्त थी, जब स्त्रियां पुरुषों के अधिकारों से दबायी और कुचली जाती थीं। अपनी यौन संतुष्टि के लिए समलैंगिकता का सहारा लेती थीं।

'लिहाफ' कहानी में एक लिहाफ के जरिए जिस खुबसूरती से उन्होंने इस विवादास्पद विषय को अपनी कहानी में पिरोया है, वह काबिलेतारीफ है। बिम्बों के जरिए अपनी बात कहने में महारत हासिल करने वाली आपा की इस कहानी को अव्वल दर्जे का कहा जा सकता है। यहाँ हाथी को एक खुबसूरत बिम्ब के जरिए दर्शाया गया है। इस कहानी की अश्लीलता के आरोप में उन्हें कोर्ट -कचहरी का चक्कर लगाना पड़ गया।

आपा की कहानियों में स्त्रियों की अपनी अलग दुनिया बसती है। ये दुनिया तीसरी दुनिया की तरह गोल-गोल घूमती है, जहाँ उनकी महत्त्वाकांक्षा पछाड़ खाकर गिरी

हुई रहती है। उन औरतों की जिन्दगी को नजदीक से झांकते हुए वह उनकी पड़ताल करती हैं।

"क्या औरत होना काफी नहीं! एक निवाले में इतना अचार,चटनी, मुरब्बा , क्यों लाजिमी है।" उनकी आँखों में आँसू चलने लगे।

और फिर उस निवाले को बचाने के लिए सारी उम्र की घिस-घिस ....।

उपर्युक्त संवाद 'निवाला' कहानी से लिया गया है, जिसमें सरला बेन एक उम्रदराज कुंआरी नर्स की भूमिका में हैं। दुनिया जहान के दुख दर्द को दूर करने वाली यह अकेली औरत खुद अपने कुंआरेपन के कारण सुख से महरूम हैं। इस पूरी कहानी में मात्र एक पुरूष पात्र है, जो सरला बेन के बस के सफर का हमराही है। बाकी सभी पात्र महिलाएं हैं, जो सरला के अकेलेपन और उससे उपजे दुख में गुत्थमगुत्था हैं। आपा की कहानियों में औरतें, औरतों की हमदर्द.ही रही हैं , उनके सुख-दुख में शामिल उनकी रगों में समाई हुई।

दरअसल आपा की कहानियों को पढ़ते वक्त मैं मुंबई की लोकल ट्रेन की महिला बोगी में सवार दिखती हूँ , जहाँ इनकी रोज की दिनचर्या उन्वान पर होती है।

इनकी आँखों का काजल एक आँख से दूसरी आँख तक बहता हुआ एक खूबसूरत लकीर बनाता दिखता है, जिसमें यह अपने जीवन की त्रासदियों से उबरती नजर आती हैं।

'निवाला' कहानी में सरला बेन, 'छुई-मुई' की भाभी जान और बी मुगलानी जैसी औरतें भी हैं, जो जचगी को रेल में सफर करने जैसा आसान बना देती हैं।

सीमा संगसार

चर्चित कवयित्री, लेखिका।
'एक शहर का जिन्दा होना' और 'कहवा घर' कविता-संग्रह प्रकाशित
संपर्क : विशिष्ट शिक्षक, मध्य विद्यालय बीहट, बरौनी, बेगूसराय

आपा बच्चा जचगी जैसै मुश्किलातों को होंठ चबाकर मुस्कुराने वाली बेदिल महिलाओं के साहस को अपनी कलम की ताकत बनाती हैं।

स्त्री विमर्श यहाँ खूब होता है, लेकिन चीनी-पानी से खौलते कराह में चाशनी में डूबे हुए शब्दों के जरिए जज़्बात के पैरहन में लिपटी हुई यह कहानियां उस वक्त की औरतों की ही कहानियां नहीं हैं, यह कहानियां आज भी उतनी ही मौजूं हैं और यही सबसे बड़ी विशेषता है आपा के कहन की, जिसकी गहन बुनावट को लोग आज भी आहिस्ते-आहिस्ते उधेड़ते हुए उसमें अपनी कहानियों के रेशे को बुनते नजर आते हैं .....

आपा की कहानियों को पढ़ने वक्त एक-एक शब्द को चबा-चबा कर पढ़ने की आदत पड़ जाती है। उर्दू से हिंदी में अनूदित यह कहानियां उर्दू के मूल शब्दों के साथ नीचे उनकी हिन्दी तरजुमा की हुई हैं, जो पाठकों को उर्दू साहित्य से न केवल परिचित करवाती हैं, उनकी खूबसूरती से सीखने को व्यग्र भी करती हैं।

बचपन से ही जिद्दी स्वभाव वाली आपा अपने स्त्रीत्व को भी चुनौतियों की तरह स्वीकार करती हुई भले ही उनकी तरह छुईमुई नहीं बनी, लेकिन उनके संघर्षों और अधिकारों के प्रति हमेशा सजग और जागरूक रहीं।

न जाने आपा को नींद कैसे आती होगी। इतनी स्त्री पात्रों के बीच चीखती-चिल्लाती हुई, बुरे स्वप्न के मानिंद उनकी टूटती हुई नींद ही उनके सपने थे।

यह इतना बड़ा चीखता चींघाड़ता बंबई और उस चिंघाड़ते शहर में एक अकेली आपा।

आपा का यह रचना-संसार इतना विस्तृत है कि मुंबई शहर और किनारे पर हिलोरें मारते समंदर की स्याही भी कम पड़ जाए।

झानो

अनिरुद्ध प्रसाद विमल

झारखंड गोड्डा की ललमटिया जाने वाली सड़क पर राम बाबू की मोटर साइकिल सरपट दौड़ती चली जा रही थी। सुनसान सड़क, दूर-दूर तक कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। सिर्फ सड़क किनारे के वृक्ष थे, जो पीछे की ओर तेजी से भाग रहे थे।

राम बाबू ललमटिया में नौकरी करते हैं। सरकारी सेवा में हैं। अच्छी पगार मिल जाती है। घर से भी संपन्न हैं। पत्नी-बच्चों के साथ ललमटिया में ही रहते हैं। नौकरी के अतिरिक्त पत्रकारिता भी करते हैं। आज अपने अखबार, जिसमें वे नियमित एक स्तम्भ लिखते हैं, की जरूरी बैठक में भाग लेने ही गोड्डा गये थे। सात बजे संध्या से बैठक थी। अपने ऑफिस टाइम के बाद वे सीधे बैठक के लिए निकल गए थे।

रात तो होनी ही थी। दो घंटे की बैठक, रात के नौ बजे वे गंतव्य के लिए निकले। गोड्डा से तीस किलोमीटर ललमटिया। घर पहुँच कर घड़ी देखी, तो सवा दस बज रहे थे। पत्नी ने दरवाजा खोला। बरामदे का बल्ब राम बाबू ने ही जलाया। प्रकाश चारों तरफ बिखरते ही पति-पत्नी दोनों की नजरें एकबारगी ही जिस चीज पर पड़ी कि वे चौंक गए। एक अनजान आठ-दस साल की अबोध छोटी-सी लड़की नीचे फर्श पर बेसुध सोई पड़ी थी। दुबली-पतली, जीर्ण-शीर्ण काया। चित्थी-चित्थी कपड़ों में लिपटी हाड़-मांस की एक पुतली-सी। रंग हल्का काला, तीखे नाक-नक्श। लगभग काली ही, परन्तु चेहरे का पानी तेज। जटाजूट लंबे घुँघराले बाल, एकदम गुड़िया-सी लग रही वह लड़की पसीने से भीगी थी।

राम बाबू को उसे जगाना भी था। अनजान किसी बच्ची को अपने दरवाजे पर यूँ ही पड़े छोड़ देना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं था। राम बाबू दयालु स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्होंने प्रश्न सूचक दृष्टि से पत्नी की ओर देखा। पत्नी लिखी-पढ़ी समझदार थी। पत्नी ने कहा- "आप पत्रकार हैं। 'झारखंड में आदिवासी स्त्रियों की स्थिति' पर अखबार में आप एक अलग स्तंभ भी लिखते हैं। आप जैसा उचित समझें, करें। मुझे आपके निर्णय पर कोई आपत्ति नहीं होगी।"

राम बाबू बोले- "सरकार की कथनी और करनी में कितना अन्तर है, वह हम जानते हैं। सरकारी सेवा में कलम को ठोक-बजाकर चलाना पड़ता है।"

पत्नी ने सोचकर कहा- "यह सब बाद की बातें हैं। बच्ची सोई है, परन्तु देखिये, भूख से उसके पेट और पीठ दोनों मिलकर कैसे एक हो गए हैं। थकी है, इसीलिए नींद नहीं खुल रही है। कोई संथाली लड़की है। इसे पहले जगाइये, इसकी व्यथा-कथा सुनने के बाद ही

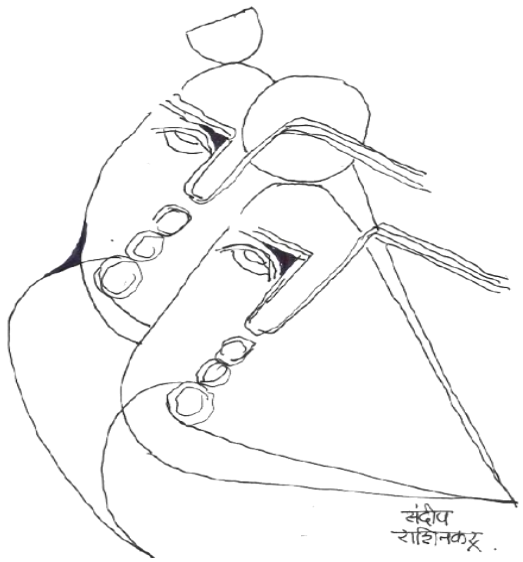

कुछ करेंगे।"

गर्मी का दिन था। राम बाबू ने बरामदे में लगे पंखे का स्विच ऑन कर दिया था। पंखे की ताजी हवा पाकर उस लड़की की नींद खुल गई थी। वह हड़बड़ा कर उठ बैठी थी।

राम बाबू ने बहुत प्यार से पुचकारते हुए कहा- "डरो मत बेटी, सुरक्षित जगह पर आ गई हो। कौन हो तुम? कहाँ से आई हो ?" "मेरा नाम झानो है।"

"बाप का नाम ?"

"सुग्गन मुर्मू।"

"घर?"

"लाखातरीं, सौतारी टोला"

"आ रही हो कहाँ से ?"

"बरबन्ना, बाबू टोला से।"

"बरबन्ना यहाँ से आठ कोस है। तुम्हारा घर अभी भी दस कोस से कम नहीं। भागी क्यों बेटा ?"

"मैं चार साल की थी, माँ गुजर गई। बाप को दारू पीने की लत थी। सात साल की हुई तो बाबू ने मुझे बरबन्ना एक ठेकेदार के घर थरिया-वासन करने के लिए हजार रुपये महीने पर नौकरी पर लगा दिया। मैं पढ़ना चाहती थी बाबू। मेरी इस जिद पर पढ़ाने का वादा कर ठेकेदार मुझे ले गया।"

"...तो तुम वहाँ पढ़ती भी थी?" राम बाबू ने पूछा था।

"हाँ बाबू, काम-काज के बाद उनके बच्चों के साथ मैं भी पढ़ती थी। दो वर्ष अपने घर के स्कूल में भी रोज पढ़ने जाती थी।"

"फिर भी बाप ने...?"

"करमजली हूँ बाबू। बाप हमेशा यही कहकर दुत्कारते थे।"

"तब ठेकेदार के यहाँ से तुम्हें नहीं भागना चाहिए।"

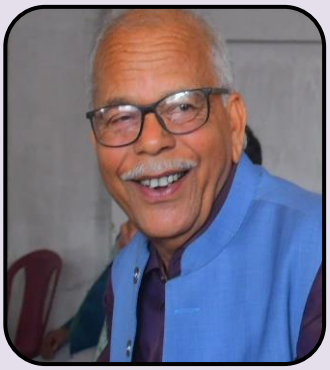

अनिरुद्ध प्रसाद विमल

राष्ट्रीय स्तर के वरिष्ठ कथाकार, उपन्यासकार, प्रबंध काव्यों के प्रणेता। तीन दर्जन पुस्तकें प्रकाशित। हिंदी और अंगिका में लेखन।

सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, उच्च विद्यालय चंगरी मिर्ज़ापुर, बांका

"साल भर से मेरे बापू पगार लेने नहीं आ रहे हैं। बाप आखिर बाप ही होता है। दूसरा कोई है भी तो नहीं संसार में।... और इधर ठेकेदार की जनानी का अत्याचार इतना बढ़ गया कि बर्दाश्त करना कठिन हो गया।" कहते-कहते झानो फफक कर रो पड़ी।

राम बाबू की पत्नी को दया आ गई। वह कोमल हृदय की थी, झानो के साथ वह भी रोते हुए बोली- "छोड़िये भी अब, मुझे इस लड़की पर विश्वास हो गया। कुछ भी हो, यह लड़की धोखा नहीं देगी।"

फिर झानो से बोली- "कब की खाई हो?" "यह दूसरा दिन है मैया।"

यह सुनते ही राम बाबू की पत्नी द्रवित होकर बोली- "रात हो रही है।

चलिए, सभी मिलकर भोजन करें। झानो, चल तू भी भीतर चल।... और सुन झानो, थकी-मांदी है। तू भी नहा ले। कपड़े में दे रही हूँ।" बाथरूम दिखाते हुए वह कपड़े लाने चली गयी।

राम बाबू को भी लगभग झानो की ही उम्र की बेटी थी। मात्र दो ही बच्चे, बेटी बड़ी थी। दिव्या उसका नाम था और आठ साल का बेटा, दिवेश। बच्चे दोनों सो गये थे। राम बाबू, उनकी पत्नी और झानो एक साथ खाने पर बैठे।

सुबह तड़के झानो जूठे सभी बर्तन धोने के लिए समेटने लगी तो राम बाबू ने टोका- "नहीं झानो, बर्तन तुम नहीं माँजोगी, उसके लिए आया आती है। तुम नाश्ता कर मेरे साथ चलो। तुम्हारे घर हो आते हैं।"

करमजली तो नहीं कहूँगा, परन्तु कुछ वैसा ही भाग्य था झानो का। उसका बापू कोरोना बीमारी की भेंट चढ़ चुका था। एक बड़ी बहन थी और एक बड़ा भाई,

जिसका कहीं अता-पता नहीं था। डीह पर कुत्ते बैठे हुए थे। फूट-फूट कर खूब रोई झानो।

राम बाबू दोपहर तक लौटे। झानों को साथ में आई देखकर पत्नी सब कुछ समझ गई थी। झानो साथ में रोती हुई उतरी और अपने कपड़े समेट कर जाने लगी। राम बाबू की पत्नी ने टोका- "कहाँ जा रही हो झानो ?"

"जहाँ मेरा भाग्य ले जाये मैया।"

"झानो, तू कहीं नहीं जायेगी। मेरी बेटी बनकर रहेगी। सिर्फ एक वचन दो। "

"बोलो माई, जान देकर भी पूर्ण करूंगी।"

"बेटी नाम को कलंकित मत करना।"

"और कुछ माई ?"

"हाँ झानो, पढ़ाई की सारी व्यवस्था हम देंगे। तुम पढ़कर इतना बड़ा आदमी बनना कि गर्व से हमारा सिर ऊँचा हो जाये। जहाँ, जिस स्थिति में रहना समस्त नारी जाति की उन्नति और अधिकारों के लिए लड़ते रहना।"

"ऐसा ही होगा माई।" कहकर झानो-राम बाबू की पत्नी से लिपट गई थी।

लघुकथा

इंटरनेट

मुकेश कुमार मृदुल

सुधाकर ऑफिस से आते ही धम्म से सोफे पर गिर पड़ा। दिनभर की थकान और बेचैनी उसके माथे पर स्पष्ट दिख रही थी। पानी का ग्लास बढ़ाते हुए पत्नी ने पूछा - 'कुछ हुआ है क्या।'

"क्या कहूँ राधा। आजकल इंटरनेट काफी स्लो रहने लगा है। घर हो या दफ्तर। छोटे - छोटे काम को निपटाने में घंटों लग जाते हैं।" माथे से पसीना पोछते हुए उसने थकी हुई आवाज में गर्दन लुढ़काते हुए कहा और बेसुध हो गया। सुधाकर की दिनचर्या से वाकिफ राधा अंदर-ही-अंदर कुढ़ गयी। हुंह ! ऐसी भी जिंदगी होती है। दफ्तर से आने के बाद फेसबुक, इंस्टाग्राम और ह्वाट्सऐप में लगे - लगे सो जाना। रात में उठ – उठकर मोबाइल टटोलना। जगते ही मोबाइल में भिड़ जाना। फिर दफ्तर जाने तक उसमें समाये रहना। जल्दी-जल्दी में सर पर पानी उड़ेलकर खाने के लिए बैठना। खाने वक्त भी नजरें मोबाइल से हटने का नाम नहीं। गजब की करामात है, सोशल मीडियाओं की। पारिवारिक इंटरनेट को समाप्त करने पर तुला है। लोग ऐसे रमने लगे हैं कि अपनो की सुधि भी समाप्त होने लगी है। चार दिन पहले बेटी ने इनसे किताब पढ़ाने की जिद क्या कर दी, तमाचे जड़ दिये। मुझ पर झल्ला उठे – "राधा ! बच्ची को गाइड नहीं कर सकती। देखो तो एक जरूरी पोस्ट करने में लगा हूँ।"

प्रतिदिन, इतनी ही व्यस्तता। जब भी इन्हें घर की जरूरतों को बताया। पल्ले झाड़ लिये – "अरे !यह सब तुम भी कर सकती हो। आजकल महिलाएँ क्या नहीं करती। ऑफिस से तुम्हारी छुट्टी जल्दी हो जाती है। रास्ते में सब ले लेना।"

समझ में नहीं आता कब इनको जरूरी पोस्ट बनानी नहीं होती है। उसके मन में आया कि उसे तड़पने के लिए छोड़ दें। फिर वह पसीजती हुई पास आयी। राधा ने निढाल पड़े अपने पति के जूते और कपड़े खोले। उसने पंखे की गति को तेज कर दिया और एक गिलास पानी बढ़ा दिया। सर में तेल लगाने के लिए उसके पास बैठ गयी। प्यार भरे संस्पर्शों से उसकी बेचैनी अब धीरे – धीरे कम होने लगी थी। मम्मी को पापा के निकट बैठे देख, उसकी पाँच वर्ष की बिटिया भी दौड़ती हुई आयी – 'पापा ! पापा- पापा! ' सुधाकर ने हाथ फैलाकर उसे बगल में बैठा लिया। चहकती हुई वह तुतले स्वर में बतियाने लगी। सुधाकर ने महसूस किया, इंटरनेट तेजी से काम करने लगा है। उसने महसूस किया,उसके आसपास कोई हल्की सी गंध पसर रही है।सुधाकर ने पत्नी की ओर प्यार से देखा - " राधा ! लवेंडर से स्नान किया है क्या तुमने ? "

राधा उसके कंधे पर झुकती चली गयी। बिटिया ने सुधाकर के हाथ से मोबाइल लिया और बैठक में जाकर किसी विडियो गेम में उलझ गयी।

समूचे घर में इंटरनेट का अपनापन पसर गया।

दरकती दीवारें

रमेश चंद्र

नेमतपुर में फ़ज्र की अज़ान के साथ खुशियों ने डेरा डाल दिया। पूरे तीस रोज़ों के बाद आज ईद की नमाज़ अदा की जाएगी। भुनी जाती सेवइयां भीनी-भीनी महक दे रही हैं। रंग-बिरंगे कपड़ों में बच्चे बड़े मोहक लग रहे हैं। ईदगाह भी इन नन्हे नमाज़ियों के ख़ैरमक़दम में बेकरार सी हुई जाती है। इत्र की खुशबू ने माहौल पूरी तरह मुअत्तर कर दिया है। दिरहम, दीनार की दरियादिली यहाँ नहीं तो और कहाँ ?

बरक़त हुसैन साहब ! गांव के नामचीन शख़्सियत। अल्लाह तबारको-तआला ने तमाम नेंमतों से नवाज़ा। तीन बेटों और दो बेटियों से भरा परिवार। निहायत ही शरीफ़ बीवी। इलाके में इज़्ज़त और पंचायत में प्रतिष्ठा, क्या नहीं दिया मौला ने ? लेकिन अफ़सोस ! आज दोनों बिस्तर पर हैं। बुआ ने कई बार कोशिश की लेकिन कोई उठने को तैयार नहीं। और, फिर उठे भी तो क्या करे ? इटली से इंजीनियर बेटे ने आने से साफ़ मना कर दिया। जिगर के टुकड़े कहे जाने वाले सबसे छोटे बेटे ने हाल ही में अमरीकी जॉब लिया है, लिहाज़ा जबतक ग्रीन कार्ड होल्डर न हो जाता, उसका आना मुमकिन नहीं। बेटियां ब्याही जा चुकी हैं। अब वे अपने घर की ज़ीनत हैं। रहा मंझला तो वह चाह कर भी घर की देवड़ी पार नहीं कर सकता। अंतर्जातीय विवाह क्या किया, हुसैन साहब की नज़रों से गिर गया। पंजाब के फारम में मुंशीगिरी करता है । दौलतमंद बाप का बेटा ग़ुर्बत में ज़िंदगी बसर करता है। गाहे बगाहे संगी-साथियों से अब्बू-अम्मी की ख़ैरियत लेते रहता है। अम्मी बीती रात जब नमाज से फ़ारिग़ हो दुआ के लिए हाथ उठाई तो दो बूंद आंसू मंझले के लिए भी हथेलियों पर गिरे थे। "बेचारा किस हाल में होगा ? बेटियों के लिए कपड़े ख़रीद भी पाया होगा कि नहीं ? काश ! उसके अब्बू मान जाते। इन्हें तो मेरे बेटे का मुंह तक देखना गंवारा नहीं। अब ऐसे में ईद की क्या खुशी ?" महावीर बाबू रामायण पाठ समाप्त ही किये थे कि किसी ने बाहरी गेट पर दस्तक दी। इतना सवेरे कौन हो सकता है ? अनुमान लगाते-लगाते बढ़े और गेट खोल दिया। सामने नक़ाब में एक युवती खड़ी थी। हाथ में मुट्ठीभर सामान, साथ में दो बच्चियां। "शायद, ज़कात-ख़ैरात के लिए आई हो, लेकिन इसके लिए तो इसे मुस्लिम बस्ती में जाना चाहिए। ये यहां क्यों आई ?" अनुमान नतीजे में बदलता तभी उस युवती ने दोनों हाथ जोड़ दिए- "जी ! मैं महावीर बाबू से मिलना चाहती हूं।" "लेकिन तुम हो कौन ?" "जी ! मैं बरक़त हुसैन साहब की मंझली बहु हूँ।" युवती बोली। "क्या..? ये क्या बक

> महावीर बाबू की पत्नी आगे बढ़ आँचल से बहु की पेशानी पोछीं और गले लगा लिया। बहुएं बढ़ीं और बेटियों को गोद में ले लीं। आरती की थाल लाई गई। आरती हुई और बरक़त हुसैन की बहु ने महावीर बाबू की देवड़ी में क़दम रखे।

रमेश चंद्र

वरिष्ठ कथाकार। 'भिखनापहाड़ी', 'पारसमणि' और 'रुकना नहीं राधिका', कहानी संग्रह प्रकाशित। आकाशवाणी से कहानियाँ प्रसारित। शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के अनेक प्रशासनिक पदों को सुशोभित करने के पश्चात सेवानिवृत्त।

रही हो तुम ?" "जी ! मैं इटली या अमरीका वाली उनकी बहु नहीं, बल्कि पंजाब के फारम में काम करने वाले उनके मंझले बेटे की बीवी हूँ।" हथौड़े पड़े ज़ेहन पर। महावीर बाबू को विश्वास नहीं हो रहा था, लेकिन ये हक़ीक़त थी। ज़ोर की आवाज़ लगाई महावीर बाबू ने। बेटे, बहू और पत्नी सभी भागे चले आये। पत्नी को इशारा कर लगभग चीखते हुए बोले- "देख रही हो, ये बड़े-बड़े बकने वाले बरक़त की बहु है !" "तुम अब ओछी बातें न करो।" महावीर बाबू की पत्नी आगे बढ़ आँचल से बहु की पेशानी पोछीं और गले लगा लिया। बहुएं बढ़ीं और बेटियों को गोद में ले लीं। आरती की थाल लाई गई। आरती हुई और बरक़त हुसैन की बहु ने महावीर बाबू की देवड़ी में क़दम रखे। पीछे से बशीर हुसैन भी आये और आकर नज़रें नीची किये बैठ गए। महावीर बाबू अब ज़्यादा बर्दाश्त नहीं कर सके। उठे और बशीर को दो थप्पड़ रशीद कर दिए। बोले- "अभागे ! क्या हाल बना लिया अपना ? क्या ये दुश्मन का घर है जो अबतक नहीं आये ! देख तो बहू-बेटियां किस हाल में पहुंच गईं ?" और..महावीर बाबू खुद भी तो रो पड़े। अज़ीब मंज़र बन गया। आस-पड़ोस के लोग जमा हो गए। जिस बरक़त हुसैन के ज़कात-ख़ैरात से कई गांव की ईद हुआ करती थी, उन्हीं के बेटा-बहु आज इस हाल में ! ओफ़, देखा भी तो नहीं जाता। लेकिन किया भी क्या जा सकता ? बड़े लोगों की बड़ी बातें! अब तो महावीर बाबू ही कोई रास्ता निकालें।

नेमतपुर अब वह नेमतपुर न रहा। कभी महावीरी मेले में लाठियां भांजने का काम और तमाम जिम्मेवारियां बरक़त हुसैन ही लिया करते थे। उधर मुहर्रम में ताज़िया महावीर बाबू के कंधों पर होता। वक़्त के थपेड़ों ने बहुत कुछ बदल दिया। मज़हब की मीनारें ऊंची होती गईं और ईमान की नींव खोखली होती गई। धर्म ने धंधे का रूप अख़्तियार कर लिया। लँगोटिया यार और सहपाठी रह चुके बरक़त हुसैन व महावीर पिछले कई सालों से एक दूसरे का हाल-समाचार तक लेना मुनासिब न समझे। बल्कि, गाहे-बगाहे एक दूसरे को नीचा दिखाने से बाज भी न आये। ख़ैर, अब तो मोहल्लों को नफ़रत की ऊंची दीवारों से घेर दिया गया है। महावीर बाबू ने पत्नी को बुलाया और कान में कुछ कहा। पत्नी के होंठों पर आई मुस्कान का राज़ लोग न समझ सके। सबने देखा, महावीर बाबू मंझली बहु, बशीर और अपने पूरे कुनबे के साथ मोटर गाड़ी में सवार हो रहे थे। बन्दूक के साथ स्टेयरिंग सीट पर बैठे उनके तमतमाये चेहरे किसी अनहोनी की आशंका जता रहे थे। बातें बड़ी तेज़ी से पसरती चली गईं....। उधर नमाज़ ख़तम हुई और लोगों का मिलना-जुलना शुरू हुआ। बरक़त हुसैन ईदगाह से बोझिल क़दमों अपने दौलतखाने को रुख़सत हुए। जानते थे, बीबी ग़मगीन ही होगी। मुद्दत हुए, उसने आंखों में कभी सूरमा नहीं डाला। "नहीं..नहीं..कम से कम आज तो उसे नए कपड़े पहन लेने चाहिए। थोड़ी देर में पूरा मुहल्ला मिलने आएगा। लोग क्या सोचेगें ?"

जब बरक़त हुसैन अपने घर के बाहर महतो टोली और बबुआन गांव के सैकड़ों लोगों को देखे तो अज़ीब कैफ़ियत होने लगी। क्या ये लोग ईद मिलने आये हैं ? नहीं,नहीं, ज़रूर कोई गड़बड़ है। हिम्मत की और दरवाज़े पर आए। सामने जो देखा तो आंखें फटी की फटी रह गईं। मूंछों पर ताव देते, हाथ में दुनाली लिए महावीर बाबू बिराजमान थे। बलात् बलवे की आशंका से ज़िस्म के मसामों ने पानी छोड़ दिया। लेकिन थे अखाड़े के नामी उस्ताद सो हर दाव-पेंच से बख़ूबी वाकिफ़ थे। आगे बढ़े और बोले- "क्यों महावीर ! बुढ़ापे की दहलीज़ पर क़दम रखे दुनाली घूमा रहे हो ? कांपती उंगलियां से ट्रिगर नहीं दबते प्यारे !" महावीर बाबू ने एक बार फिर मूंछों पर ताव दिया और बोले- "बरक़त ! इस मुग़ालते में न रहना। अभी बहुत जान बाक़ी है इन उंगलियों में। कहो तो दिखा दूँ ?" ऐन मौके पर हुसैन साहब की बीवी ने महावीर बाबू के सामने पानी का ग्लास रखते हुए कहा- "भाई साहब ! पानी पीजिये।" "नहीं भावज ! पहले इस नामुराद को समझा दीजिए। आज अगर बहैसियत बेटी का बाप न आया होता तो दुनाली ख़ाली कर देता इसके सीने में।" तभी महावीर बाबू की धर्मपत्नी बाहर आईं और बोलीं- "अब चूप भी रहोगे क्या ! रस्सी जल गई लेकिन ऐंठन न गई। लो ये फेहरिस्त, जल्दी से सारा सामान मंगवा लो।" बरक़त कुछ समझ न पाए। उधर आंगन में हलचल बढ़ती जा रही थी। माज़रा समझ से परे था। मर्द समझ न पाते थे लेकिन औरतों ने कानों-कान सब कुछ समझ लिया। सो घरों से निकल आंगन में जमा होने लगीं। फिर आंगन में मंगल गान शुरू हो गया। ये पहला मौक़ा था जब मियांजी के आंगन में महावीर बाबू की बहुएं झूम-झूम कर संस्कार गीत गा रही थीं। मज़ा तो तब आने लगा जब मुस्लिम बहुओं ने भी उनके सुर में

सुर मिलाने शुरू कर दिए। गंगा-जमना का बहाव एक हो गया।

लगभग चीख़ ही पड़े बरक़त हुसैन-"अरे कोई बताएगा, ये सब क्या चल रहा है ? ये कौन-सा ड्रामा हो रहा है ? कुछ तो बोलो, वरना मेरा सर फट जाएगा। मैं पागल हो जाऊंगा ।" महावीर धीरे से फुसफुसाए- "पागल तो तुम पहले से ही हो,अब क्या नया पागल होना है !" "ऐ क्या बोला ?" चढ़े तेवर बरक़त ने टोका। महावीर ने चेहरे पर आई मुस्कान को ग़ायब कर गम्भीरता का लबादा ओढ़ लिया। सवाल मूंछों का जो ठहरा ! इतने में महावीर बाबू की पत्नी छोटी बच्ची लिए बाहर आईं और बरक़त की गोद में डाल दीं। "भावज ! ये कौन है ?" ताज़्जुब से बरक़त ने पूछा। "पहचानिये भाई साहब !" महावीर की पत्नी मुस्कराईं। बरक़त ने बच्ची को देखा। वह उनकी गोद में हाथ हिला-हिला कर खेल रही थी। तब तक बड़ी बच्ची को लिए उनकी बीवी भी बाहर आईं और बोलीं- "और इसे देखिए ! पहचाना आपने ?" "ये क्या पहचानेगा भावज ! बूढ़ा सठिया गया है।" महावीर ने चुटकी ली। तीन तरफ़ा मार ने बरक़त के सोचने की रफ़्तार कुंद कर दी। रही सही कसर महावीर की बहुओं ने तब पूरी कर दी

जब दुल्हन के जोड़े में मंझली बहु को ला खड़ा किया। हाथ जोड़ महावीर की पत्नी बोलीं- "भाई साहब ! आज ईद है। अपनी मंझली बहु को ईदी न देंगे ?" बरक़त ने चाँद-सी दुल्हन को देखा। दुल्हन की झुकी आंखें लगातार बरसी जा रही थीं। धीरे-धीरे धुंध के बादल छँटने लगे। बरक़त उठे। बच्ची को महावीर की गोद में डाला। बहु को भर नज़र निहारा और लगभग चीखते हुए बोले- "कहाँ है बशीर ?" अनहोनी की आशंका ने नीरव सन्नाटा ला दिया। "मैं पूछता हूँ, कहाँ है बशीर ?" चीख़ बढ़ती गई। महावीर की पत्नी अंदर गईं और बशीर को ला खड़ा किया। बशीर नज़रें झुकाये ख़ामोश खड़ा था। अंग-अंग कांप रहे थे। अंजाम का आगाज़ हो चुका था।

तड़ाक..तड़ाक..तड़ाक..! लगातार तीन थप्पड़ ! लोगों की सांसें रुक गईं। वही हुआ जिसका डर था..। लेकिन यह क्या ? बरक़त ने आगे बढ़ बेटे को गले लगा लिया और बुक्का फाड़ रोने लगे। आज सब्र के सारे बाँध टूट गए। बशीर को अब्बू का कंधा एक अरसा बाद मिला था। सो सिसकी बंधीं तो सिसकते ही रहे। बाप-बेटे क्या, हिंदू-मुस्लिम सब साथ रो रहे थे। खुशियां सीमाओं में बांधी जा सकती हैं। लेकिन आंसुओं के सैलाब तमाम बंधनों से आज़ाद होते हैं। जब जिधर चाहें, उधर बह जाते हैं। और..आंसुओं के इस सैलाब ने तमाम मज़हबी दीवारों को धराशायी कर दिया। बड़ी मुश्किल से बाप-बेटे चुप हो पाए। बरक़त ने महावीर की पत्नी की तरफ़ देखा और बिलखते हुए बोले- "भावज! कह दीजिए इस शैतान से, आइंदा कभी मुझे छोड़कर न जाये। ग़रचे गया तो इसे गोली मार दूंगा मैं।" तभी सामने पड़ी बंदूक की तरफ़ नज़र गई। देखा,बन्दूक जस की तस पड़ी थी लेकिन महावीर नहीं थे वहां। कहाँ गए महावीर ..? बरक़त आगे बढ़ देखे। महावीर मोटर स्टार्ट कर रहे थे। छलाँग लगा दी बरक़त ने। महावीर को पकड़ लिया। गले लगाया और फिर बिलखते हुए बोले- "बड़ी अच्छी ईदी दी तूने। बुढ़ापे में क्या ज़बरदस्त पटकनी दी यार ! ताउम्र तेरा तोहफ़ा याद रखूँगा।" महावीर ने घूमकर आंसुओं को छुपाने की कोशिश की। लेकिन आज न छुपा सके।

लोगों ने देखा- सालों पुरानी नफ़रत की दीवारों ने दरकना शुरू कर दिया। और.. सच तो ये है कि दरकती दीवारें ठहरती कहाँ हैं ? लम्हे न लगे, ओ धराशायी हो गईं।

मोटर पर पूरा कुनबा सवार हो रहा था। महावीर बाबू की छोटी बहु ने अपने लाडले देवर को धीरे-से चिकोटी काटी और घूंघट से फुसफुसाई -"देख लिया न देवरजी ! भाग-भुग के शादी करने का अंजाम ! सुना है, वो बेलापुर वाली से तेरे नैन-मटके कुछ ज़्यादा ही चल रहे हैं। फिर सोच लेना।" बेचारा देवर मारे शरम पानी-पानी हो गया। मोटर गाड़ी ने बढ़ना शुरू कर दिया। लेकिन छोटी बहु अब भी घूंघट में हंसे जा रही थी..।

एक्कैसम सदीक मानसिकता

नारायण झा

"देखियौ तँ ... एहि तीनटामे एकटा दोसर होइतैक तँ केहेन रहितैक ।" टोलक एकटा दादी बजलखिन। दरभंगा हॉस्पिटलसँ नीरज झा अपन पत्नी लए घर घुरले रहथि, किछुए काल तँ भेले छलनि । बोलेरो वला ड्राइवर तँ चाह पीबिए रहल छल। टोल-पड़ोसक दस-बीस गोट स्त्रीगण आबि जमा भए गेल रहथिन, नीरज झाक तेसर बेटी जे फेर ऑपरेशनेसँ भेलनि अछि, तकरा देखबा लेल। सभ स्त्रीगण अपन-अपन तर्क एकपर एक तेना दागि रहल छलखिन, जेना कंसारक धीपल बालु पर चाउर पड़िते मुड़ही भए रहल हो। एहि अवसरि पर ओ लोकनि एना लाभ उठा रहल छलीह, जेना लुटिमे लटबा नफा।

" यै लालदाइ, जे कपारमे लिखल रहतै सएह ने हेतै !" एकटा टोलक स्त्री बजलखिन।

"यै कनियाँ .... यै कनियाँ, नीरज फोटो नै करबौनै छलै... आब तँ फोटो सभ करा कए देखैए, कोन बड़का, कोन छोटका, सभ करबैए।" टोलक नबकी चाची कहलखिन

"यै देखथुन तँ कतेक सुन्नरि छै... छौड़िया...।" मासटरनी काकी कहलखिन

"तीनटाक बाद तँ हेबो नै करतै ...?" टोलक पढ़ुआ काकी जीह कुचैत कहलखिन

"नै यै..... आब तँ चारिमो होइ छै, मुदा तकतान बेसी करए पड़ैत छै ने..... की करितै ?" लालचाची कहलखिन।

"धुर.. जाउ... नै आब कतए .... आब तँ रस्तो बन्न कए देलकै.... ओह! भगवान अन्याय कए देलखिन, दोसर चीज नै भेलै !" बड़की बाबी कहलखिन। एक पन्द्रहियाक हॉस्पिटलक हारल-थाकल नीरज अपन ओछाओन पर पड़ल-पड़ल सूनि-सूनि हँसि रहल छलथि, मुदा मोने-मन, जे हमर समाज एखन धरि एहने पछुआएल अवस्थामे अछि ? एखनहुँ एक्कैसम सदीक मानसिकता..... ओहिनाक ओहिना छै ! की हम तीनटा बेटीक बाप छी तँ अपराधी छी ? की हम कुकर्मी छी ? नै.... किन्नहुँ नै ...., मुदा हुनकर सभक सोच पर कोनो लेक्चर देब नीरज उचित नहि बुझलथि । नीरज आ हुनक सहचरी नीलू पर एहि बातक कोनो प्रभाव नहि पड़ि रहल छलनि जेना पुरेनीक पात पर पानिक बून्न खसिते छहिलि जाइत छैक, तहिना सभक बात छहिलि-छहिलि खसैत रहलैक। ओ दुनू प्राणी कहियो एहि ओलझोल सम्बन्धी बात पर विचारे नहि कएलनि जे बेटा की आ बेटी की होइत छैक, मात्र संतान बुझैत रहलथि। मुदा हुनक पिता-माताक देह बर्फ जेना गलि रहल छलनि । नीरजक माता-पिताकेँ अपन सोचक हिसाबेँ समाजक स्त्रीगणक गपसपसँ जे सम्बल भेटि रहल छलनि, तकरासँ आश्वस्त होइत ओहन अनुभव कए रहल छलथि, जेना नीरज आ हुनक पत्नी नीलू एहि पृथ्वीक सभसँ पैघ पापी होथि । नीरजक माता कखनहुँ-कखनहुँ नोरो चुअबैत ओहि स्त्रीगण सभक सोझाँमे आ तेहेन अनुभूति कए रहल रहथि, जेना कोनो जीवनक पैघ अवसरिमे नीरज आ नीलू हारिकए आयल हो। चाह पीबि-पीबि स्त्रीगण सभ अपन-अपन घर चलि गेलीह।

नारायण झा

युवा कथाकार और कवि। साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार से पुरस्कृत। कविता, निबंध और अनुवाद की दर्जन भर पुस्तकें प्रकाशित। मैथिली और हिंदी में लेखन।

संपर्क : विद्यालय अध्यापक(11-12) +2 दयाराम उच्च विद्यालय भेजा, मधेपुर, मधुबनी

नीरज आ नीलू तीनू बेटीकेँ बेटी नहि संतान रूपमे बुझैत, प्रेम दैत रहलखिन। हुनका लेल बेटा आ बेटीक बीचक अंतरक दूरी, रेखो भरि रेघा नहि बनलनि। कोनो काजसँ एक दिन नीरज छुट्टी लए गाम पर रहथि। दुनू पति-पत्नी दुपहरियाक समयक कारणेँ एकहि घरमे बैसल रहथि। एहि समयमे हुनक तीनू बेटी स्कूल गेल रहनि । नीरजक आँखिसँ नोरक दू-चारि बून्न खसिते हुनक पत्नी नीलू पूछि देलखिन की भेल ? नीरज नहि कहए चाहैत रहथिन मुदा पत्नीक बेसी कहला पर कहए पड़लनि। कहलखिन जे हम एहि नोरक बून्नमे देखि रहल छी अपन आबए वला वृद्धावस्थाक समय, अपन मृत्युक बाद राखल लहास आ लहास डाहबा लेल विवादक ओ क्षण ! हुनक पत्नी कहलखिन जे अहाँ इएह चिन्ता करैत छी ने जे हमर ओहि घटल पैरूखक अवस्थामे देखभाल के करत ? ठीकसँ लहास कोना डाहल जाएत ? ई कहू अहाँ जे तीनू बच्चाकेँ जे जान-प्राण लगा पढ़ौनी करबैत छी, से एहने दिन देखबा लेल ? ओकरा एहि समाज-परिवारक छोट सोचसँ अलग राखि शिक्षा दैत छियै, जाहिसँ ओ सभ पहिने मनुक्ख बनए। नीरज झा हँसैत कहलखिन जे लगैए हम किछु क्षण लेल भासि गेल छलहुँ, सएह लगैए हमरो। ठीके कहैत छी नीलू ओकरा सभकेँ ओहि योग्य बना देबै, जाहिसँ ओ सभ ओहि समयमे उचित निर्णय लए कार्य करत। ओकरा सभपर आडंबरी दबाब पड़लाक बादो, ओकर सभक विचार पर प्रभाव नै पड़तैक, तेहेन मनुक्ख बना देबाक अछि। जेना क्षण भरि लेल सुरूजकेँ मेघ छेकि लैतो छैक, मुदा किछुए कालक बाद फेर सुरूज अपन प्रकाशसँ कोना प्रकाशित कए दैत अछि । सभ समाजक लोक बहुनामधारी होइतहुँ , एहेन सन विषय सभ पर सभक विचार तँ एक रंगाहे होइत छैक। जाउ नीलू चाह बनाउ....., चाह पीबाक बेर भए गेल।

नीरज एकटा सरकारी स्कूलक शिक्षक रहथि, से रहथि पक्किया शिक्षक । शिक्षकक की कर्त्तव्य होइत छैक, से बुझैत अपन दायित्त्वक निर्वहन करैत रहथि। ओ शिक्षक रहैत पढ़ौनी नहि छोड़ने रहथि तहिना नीलू सेहो पढ़िते छलीह। नीलू सेहो शिक्षक पात्रता परीक्षा पास कए प्रतीक्षामे छलथि जे कोनो स्कूलमे अपन दायित्व निमाहब। एक दिन स्कूलसँ नीरज आयले रहथि की देखलखिन अपन मायकेँ जोर-जोरसँ नीलूकेँ गारि पढ़ैत, जाहि गारिमे वएह सभटा बात रहैक जे तूँ निपुत्र छैँ, तूँ कोन जनानी छैँ, हमर बेटाक बंश खाए गेलए, तूँ अभागलि छैँ..... आदि-आदि। ओहि दिन नीलूक मुँह सेहो खुगि गेलै आ उत्तर देबए लगलैक। बरदाश्त करबाक सेहो सीमा होइत छैक। मुँहमे अंगुरी दए बजेलापर लोक अपना शकमे नहि रहि पबैए। नीरज देखलखिन जे नीलू आब बाजैसँ बाज नै आबि रहल छैक। नीरजकेँ मोनमे आबि गेलनि जे ई बात टोलक लोक सेहो बुझि जाएत आ अप्रतिष्ठा हएत। माय तँ माय होइत छैक, एकरा हमरा सभसँ कष्ट नहि हेबाक चाही । ओ नीलूकेँ हटबैत चुप करबैत कहलखिन --" माय सभसँ पहिने हम सभ मनुक्ख छी। सभ मनुक्खक अपन अधिकार होइत छैक। तूँ जबर्दस्ती मोनमे घृणा पोसि झगड़ा नहि कअर। ई केहेन बात-

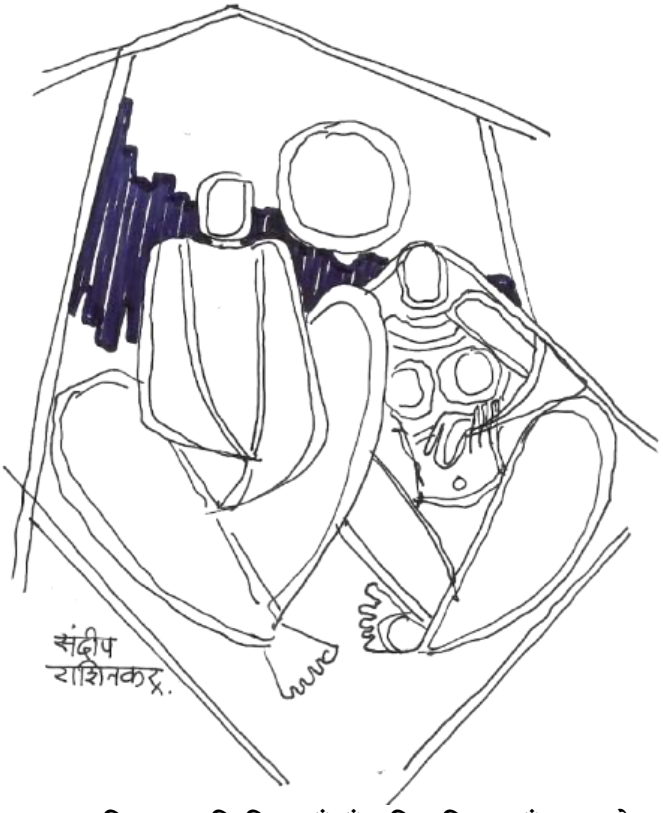

कथा कहि रहल छिहि। जँ तूँ नहि रहितए तँ हम कोना ? " " हँ.. हँ.... बुझि गेलियौ बौहु बड्ड पियरगर छौ, जो-जो। हमरा लग लेक्चर नै झाड़।" --" माय इहो तँ मनुक्ख छथि, हिनकहुँ जीबाक अधिकार छनि। " एतेक बात सूनि भनभनाइत नीरजक माय अपन घर चलि गेलीह, जे आब बेटा-पुतोहु जबाब दैत अछि।

प्रात भेल आ घरक वातावरण किछु ओझराएले सन छल। "सुनह... सुनह ..... नीरज, बाबुकेँ बजाबए तँ, एकटा गपक काज अछि।" बाउ काका कहलखिन। "बाउ काका, एखन गप नहि भए सकत बाबुजीसँ, किएक तँ हमर छोट भाइ धीरजक कनियाँकेँ संतान होनिहारी छैक, तेँ बाबूजी हॉस्पिटल पठबै लेल लागल छथि। "नीरज झा, ठीक छै तँ कखनो फदकि लेब हम।" ओहि दिन तँ घरमे एकटा पैघ उत्सवक तैयारी भए रहल छलैए। धीरजक (नीरजक छोट भाइ) कनियाँ केँ नहुँ-नहुँ दर्द शुरू भेले रहै, हुनक पिताजी महादेव बाबू पूरा घर हड़बडा देलखिन। पूरा टोलक लोककेँ बुझा देलखिन पलहि भरिमे। बोलेरो वलाकेँ फोन कए बजा देलखिन। सभ सामान सभ अपनेसँ बान्हए लगलखिन। अंतमे मोटका तोसक बान्हि, अपने माथ पर लए जखन बोलेरोमे राखए विदाह भेलखिन तखन मोन पड़ै छनि नीरजकेँ ओ दिन, जखन नीलुकेँ दोसर संतान होनिहारी छलनि आ हॉस्पिटल जाइ लेल बस पकड़ै लेल विदाह भेल रहथि। नीरज घरसँ दौड़िकए बसमे सीट राखि अएलखिन आ दौड़ि कए सामान सभ लए बसमे राखए गेलखिन। नीलूकेँ दोसर देह रहै, तेँ दर्द उठल स्त्रीक जेहेन हालति हो बस पकड़ै लेल चलैत काल, से मोन पड़ि जाइत छनि। किएक तँ पहिल बेटी रहनि, दोसरो की हेतै, से के जनैए, तेँ हुनका आ नीलूक प्रति कोनो ममता नहि बचि गेल रहैक। नीरज आओर हुनक पत्नी नीलूक प्रति हुनक माता-पिताकेँ घृणाक बादरि तेहेन लागि गेल रहनि, जकरा बड़िसैक कोनो मौसम नियमित नहि रहैक। नीरजकेँ कखनहुँ कोनो बहन्ने अवाचो कथा धरि सूनए पड़नि। जकर आदति नीरज आ नीलूकेँ ड्रग्सोसँ बेसी भए गेल रहनि, किएक तँ सुनबाक विकल्पहीन दृश्येटा सोझाँ रहनि। मुदा नीरज की बाजि सकैत छलथि अपन पिता आ माताक सोझाँमे, तेँ सभ बातकेँ पचबैत रहलथि। नीरज सत्य बात समय-समय पर कहैत रहथिन, मुदा महादेव बाबू आ नीरजक माय नीरजक सत्य बातकेँ विपरीते भावसँ असत्य बुझथिन। एक दिन सत्य बात कहैत रहथिन, ताहिमे जोर-जोरसँ हल्ला कए महादेव बाबू पूरा टोलक लोककेँ बजा अनलखिन आ कहए लगलखिन जे नीरज हमरा अवाच् कथा कहैत अछि। जाहि लाजसँ नीरज लजा गेल रहथि। ताहि दिनसँ ओ नहि चाहैत छलथि जे कोनो सत्यो बात जोरसँ कही, कोनो उचित बात जोरसँ कही, कारण पढ़ि-लीखि अनुशासन भंग कए बतकुच्चन नहि करए चाहैत छलथि। ओना कहबी छैक जे "सत्य बात बापोकेँ कही।" मुदा किंकर्तव्यविमूढ़ भए नीरज-नीलू मात्र बात-कथा घोटि जएबाक कार्य करैत छलाह, जे एहि डरसँ जे समाजक लोक सूनत तँ कहत जे ओ बापसँ मुँह लगबै छैक। तकर लाभ नीरजक माता-पिता खूब उठाबथि।

ओम्हर धीरजक कनियाँकेँ प्रसव कक्षमे प्रसव-पीड़ासँ अर्राहटिक आवाज ओहिना बाहर आबि रहल छलैए। बहुत लोक तावत पहुँचि गेल रहथि। लगैत छलै सभकेँ जे एहि परिवारमे जे कुहेस लागल छैक, से अवश्य फटतैक। नीक समाद जे परिवार आ समाज सुनए चाहैत रहथि, से होअए वला क्षण आबि गेल छलैक। एकटा ग्रामीण-- "जय भोलेनाथ..... लड़का छियै...। " महादेव बाबू जोर-जोरसँ जय शिव, जय बमभोला, जय बैद्यनाथ, तूँ हमर मोनक बात पूरा केलह, बाजए लगलाह। ई समाद बुझिते लगलैक जे सभक मूइल शरीरमे जान आबि गेलैक। लगलैक जे अमृतक बून्न मुँहमे खसि पड़लैए। ई समाद पसरिते लोकक करमान लागि गेलै। सभक स्वर एकहि टा रहैक जे आहा..... हा... एकटा तुतनी आवश्यक छलनि। बाबा-मैयाकेँ सअख-सेहेनता सेहो पूर हेतै, एहि बौआसँ। गाम अएला पर सेहो पुनः ओहिना भीड़ लागि गेलैक। नीरज झाक माय --" हँ काकी एकटा मालिक बिनु ई परिवार सून लगैत छलै। भगवान एकटा मालिक देलखिन। एतेटाक घर, आंगन, जमीन, मकानक की होइतै ? काकी आशीर्वाद देथुन।" काकी "हँ ..... यै कनियाँ ठीके कहै छी , अन्हार छलैए , भगवान तकलनि।" पहिनहुँ जे टोल-पड़ोसक काजक अंगनामे आनो गामसँ आयल स्त्रीगण जे बूलए आबथि तकरो इएह समाद कहथि नीरज झाक माय। सभ चीज-वस्तुक कोनो कमी नहि अछि, मुदा कमी अछि एकटा मालिकक। नीरज आ नीलू छोड़ि कए ओहि सोचसँ प्रायः पूरा परिवार रंगाएल छल। सभक मोनमे नव आशाक कलश कलशा भकरार होअए लगलैक। जेना नभसँ चान आंगन उतरि आयल हो, तेहने इजोतक सुरभि पसरि रहल छलैए। ओहि बच्चा लग तीनू नीरज झाक बेटी जेना पापक पोटरी हो, तेहने सदृश बूझल जाइत छलीह आ आब तँ सहजे।

नीरज आ नीलू अपन पढ़ाइ-लिखाइमे लागल रहथि, सेहो पूरा परिवारकेँ काँट भोकेबा सन अनुभूति दैक। समय कुसमय हुनका सभकेँ इहो सुनए पड़नि जे भरि दिन पढ़िते-लिखिते रहैए। बड़का-बड़का तगमा भेटितै ने। हुनका सभक पढ़ौनी आ धियापुताक पढ़ौनीसँ एकदमे नहि कियो प्रसन्न रहथि। जखन कि सभटा परिवारक सभ तरहक भार नीरजे पर रहनि, मुदा तैयो किछु ने किछु बात लए हन-हन, पट-पट करबे करनि। ताहि परिस्थितिक लाभ उठबथि धीरज। धीरज अपन भाइ नीरज पर ओठंगि काज निकालथि, घर-परिवारक खर्चमे धीरजक योगदान शून्य रहनि, मुदा यश कमाबथि धीरज। नीरजकेँ कहियो यश नहि भेटलनि। नीरजक तीनू बेटी नमहर भेलखिन, पढ़ै वाली भेलखिन मुदा हुनकर पढ़ाइक प्रति कियो एको शब्द नहि निकालथि जे ई सभ कोना पढ़तैक, कोना लिखतैक। नीलू-नीरज दुनू गोटे अपन परिश्रमसँ बेटी सभकेँ पढ़बैत रहथि। कखनो एहनो होइ जे ओ बच्चा सभ पढ़ाइ कराए बैसए की पानि आ जलखै आदि अनबाक लेल बेर-बेर परिवारक सदस्य द्वारा पठाएल जाए। संघर्षक चौबगली काँटक फाँकसँ बहराए नीरजक तीनू बेटी

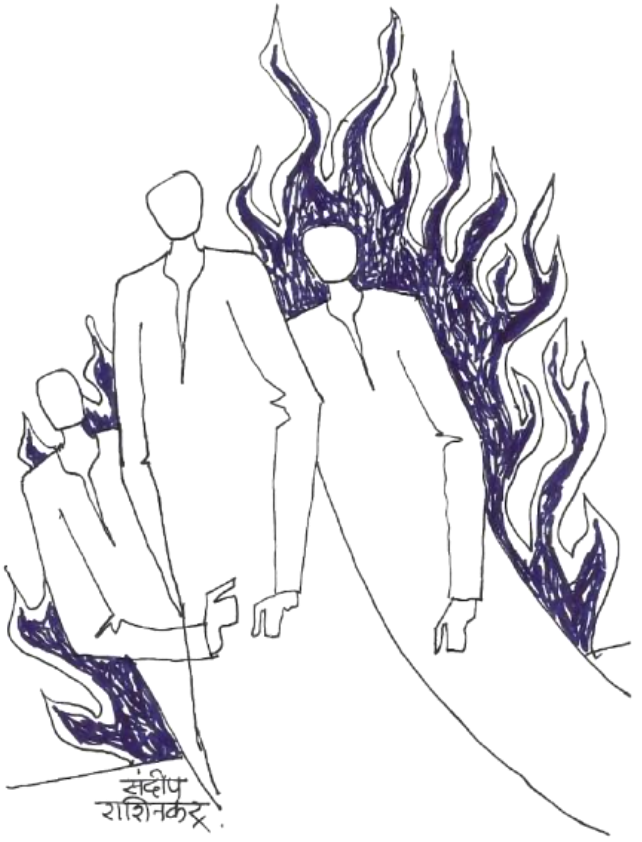

नीक जकाँ पढ़ि-लिखि समाजमे आदर्श बनि गेल रहथि । आब समाजमे नीरजकेँ बेटा नहि भेलनि, से छगुन्ता वला गप झँपा रहल छलैक । सभ ओहि बेटीक बड़ाइ करए लागल रहैक । नीरज नीलूसँ -- " आब लगैए जे हमर अहाँक संघर्षक गाछ फअड़ देत ।" --" हँ.. हँ... से हमरो लगैए ।" हुनकर बेटी सभ अपन-अपन संघर्षक रस्ता पर चलि रहल छल । किछु दिनुका बाद नीरज प्रोफेसर नियुक्तिक रिजल्ट वेवसाइटपर सर्च करए लगलथि । सर्च होइतै देखलथि अपन बेटीक नाम सेलेक्शन लिस्टमे । नीरज -- " हे देखियो नीलू, बुच्चीक रिजल्ट । आँखि जुड़ाउ ।" नीलूक आँखिसँ नोरक टघार चलए लगलैक । किछु काल खुशीसँ थकमकी जेना लागि गेलैक । सभक मोनपर नबका भोर होइत देखा रहल छलै ।

" नोत दै छी बाबा ।"

" के छिअय हौ । "

" बाबा हम आशीष ।"

"की छियैक बाउ ।" आशीष बाबाकेँ बुझबैत कहए लागल । नीरज भैयाक ओतए आइ भगवानक पूजा हेतनि आ दस-बीस गोटेकेँ नोत सेहो छनि । बाबा तेँ अहूँकेँ नोत दैत छी । बाबा जिज्ञासा कएलखिन जे बाउ आइ कोन उपलक्ष्यमे पूजा आ भोज भात की ? हँ बाबा नीरज भैयाक मैझली बेटी आइ कॉलेजमे ज्वाँइन कएलखिन, ताहि उपलक्ष्यमे ई भए रहल छैक । बाबा फेर जिज्ञासा कएलखिन जे हौ नीरजकेँ तँ तीनटा बेटिये ने ? हँ हँ.... बाबा हुनका तीनटा बेटी छनि । बड़की बेटी सेहो पढ़ि नीक नौकरी कए रहल छनि । मैझली तँ प्रोफेसर बनि गेलखिन । छोटकी सेहो खूब बढ़ियाँसँ पढ़ि रहल छनि । हँ ... बौआ आब की चाही, कोन बेटा आ कोन बेटी । हम तँ कमे पढ़ल छी बाउ, मुदा हम कहियो नहि बुझलियैक जे बेटा आ बेटीमे की अंतर होइत छैक । मुदा हमर समाज एखनहुँ तक बंश बढ़ौने मात्र बुझै छथि । मुदा ओहि बंश बढ़ेबामे की स्त्रीक बिनु योगदाने भए सकैछ ? बौआ देखै छह हमरा (बाबा कनैत ...) कहै लेल दू टा बेटा अछि, मुदा .....(ढप ढप नोर चुबि रहल छलनि) । ओ सभ बेटा नै व्यथा थिक, भरि जीवन हमरा चोसैत रहल । की हेतै ओकर सभक जीवन, से इश्वरे जानथि । आशीष--" बाबा बारह बजे धरि आबि जाएब ।" --"ठीक छै जाह, आबि जएबह हम, आब हमरा बजबैक नहि काज छह बौआ ।

दो गज़लें

1

बैर छुपा कर प्रीत जताते लोग
आग लगाकर आग बुझाते लोग!
कितने शातिर , संगदिल, क़ातिल
रोज़ ख़ून के अश्क रुलाते लोग!
आंख-मिचौली खेल रहे सब
धूप-छांह से आते-जाते लोग!
हमदर्दी जतलाते,सहलाते हैं
फिर ज़ख्मों पर नमक लगाते लोग!
खौफ़जदा रातों में आते अक्सर
नींद उड़ाते, ख़्वाब जलाते लोग!

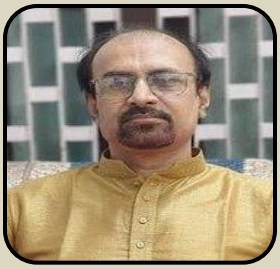

कुमार राहुल
वरिष्ठ शायर, गीतकार, ।
अनेक सम्मानों से सम्मानित ।
संपर्क : विशिष्ट शिक्षक,
सर्वोदय उच्च विद्यालय वैनी,
पूसा, समस्तीपुर

2

हौसले को मेरे आज़माती रही
मौत दर पर खड़ी मुस्कुराती रही!
मैं भी जिद पे अड़ा,वो भी थी मुतमईन
मैं बनाता रहा,वो मिटाती रही!
ठेस जब भी लगी दिल पे, आंखें खुलीं
ठोकरें मुझको रस्ता दिखाती रहीं!
मैं बहुत दूर तक यूंही चलता रहा
धूप थी,देर तक चिलचिलाती रही!
पुतलियों में सितारे चमकते रहें
तीरगी रात भर तिलमिलाती रही!
राख में एक चिनगी सी उम्मीद थी
ख़ाक में भी खुशी कुनमुनाती रही!

रोना वर्जित है पुरुष के लिए

निधि चौधरी

पुरुष ने अपने लिए
कहाँ जीवन जिया
कभी श्रवण कुमार बन
माता पिता पर सर्वस्व वार दिया
तो कभी सीता के लिए,
समुद्र को भी बांध दिया।
शिव ने शक्ति के लिए
तांडव किया
तो राधिका को
कृष्ण ने प्राणों में धर लिया।
ज़िम्मेदारियों का बोझ ले कर
चलते हुए इस जीव ने
हमेशा बस हिसाब ही लगाया
कभी बहन की विदाई का
तो कभी बेटी की पढ़ाई का
कभी पत्नी की जरूरतों का
तो कभी माँ की दवाई का
पिता के एमआरआई का
घर के ईएमआई का
और निभाया हर रिश्ता
पति,पिता,पुत्र,प्रेमी और
भाई का।
स्त्री सिर्फ नौ माह तक
अपने शरीर में
शिशु को पोषण देती है।
पुरुष ना जाने कब तक
उस शिशु को रखता है,

निधि चौधरी
युवा रचनाकार। 'एक देहाती लड़की' उपन्यास प्रकाशित। 'प्रज्ञानिका', 'निपुण संवाद' आदि पत्रिकाओं का संपादन। स्तरीय मंचों से काव्य-पाठ। राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त
संपर्क : प्रधान शिक्षक,
प्राथमिक विद्यालय
बिरनाबारी , किशनगंज

मस्तिष्क के गर्भ में,
और देता है शिशु के भविष्य को पोषण।
इनके लिए समाज ने,
कोई आरक्षण की व्यवस्था नहीं की,

रोना भी वर्जित है इनके लिए।
समाज ने इनको
सख्त ही देखना चाहा
इनकी नम आँखो का
उपहास ही उड़ाया सदा।
इन्हें रूठना आता ही नहीं
इन्होंने तो बस मनाना सीखा
वो भी बाल्यकाल से ही
तुतलाती जुबान से माँ को मनाया,
शौक से रूठी हुई प्रेमिका को मनाया,
और जब जिम्मेदारियों में उन्नीस-बीस हो गया
तो पत्नी को मनाया,
और बेटियों को तो एकाधिकार रहा
इनसे रूठने का।
और अंत में बहुत सरल होता है
इनके मन को जीत लेना
अधिक की चाह नहीं इन्हें
बस दो मीठी बातें
एक मुस्कुराता चेहरा,
और चाय की प्याली।
इतने में ही इनकी दिनभर वाली
थकान दूर हो जाती है।

दो गीत

रंजन कुमार झा

1

तूफानों के सम्मुख दीप जलाना है
सूरज नई सुबह का नया उगाना है
'संकल्पों से मिली सिद्धियाँ'
हमें रहे यह भान
गगन उसी के वश में जिसकी
ऊंची रही उड़ान
बाज सरीखे अपना पर फैलाना है
तूफानों के सम्मुख दीप जलाना है
जितने ऊंचे उठने उतनी
रख नीची बुनियाद
ज्योति मिलेगी ऊपर, नीचे
कर तम से संवाद
गहरी खानों में भी स्वर्ण खजाना है
तूफानों के सम्मुख दीप जलाना है
अगर चढ़ाई बहुत कठिन हो
तो ठहरो कुछ देर
पथिकों को ही मंजिल आखिर
मिलती देर-सवेर
'रुक जाना' ही कहा गया मर जाना है
तूफानों के सम्मुख दीप जलाना है

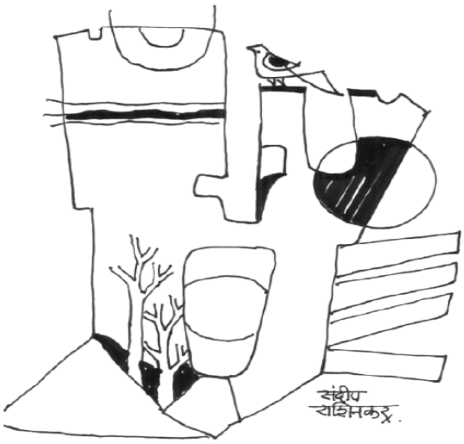

रंजन कुमार झा

चर्चित गीतकार व शायर। दर्जन भर मौलिक एवं संपादित पुस्तकें प्रकाशित। स्तरीय मंचो से काव्य-पाठ।
संपर्क : प्रधानाध्यापक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, फाजिलपुर, वीरपुर, बेगूसराय

2

आई तुम तो हँसी दिशाएँ,
गमन तुम्हारा कौन सहेगा
तुम्हीं बताओ, बाद तुम्हारे
अपना मुझको कौन कहेगा
तुम आई तो झूमी डाली
कलियाँ खिलकर फूल हो गईं
उपवन के जी भर जीने की
स्थितियाँ माकूल हो गईं
जाओगी तुम, इन फूलों के
चटक रंग सब उड़ जाएँगे
फूलों-सी तुम, बिना तुम्हारे
पतझारों में कौन रहेगा
तुम हो तो एकाकीपन को
भी मैं उत्सव कर लेता हूँ
गहन निराशा में भी
आशाओं की किरनें भर लेता हूँ
जाओगी तुम, रह जाएँगी
काली रातें,पूर्ण अमावस
चंदा-सी तुम, तुम बिन मेरे
नभ को ज्योतित कौन करेगा
बड़े नाज से माँग रहा हूँ
रिक्त न करना यह मन-आँगन
तुम्हें देखना यूँ लगता है
देख रहा हूँ नंदन कानन
जाओगी तुम, कानन के सब
तरु सूखेंगे, रेत बचेंगी
नदिया-सी तुम, बाद तुम्हारे
इस मरुथल में कौन बहेगा

सलहेस

(मिथिलांचल की प्रसिद्ध लोकगाथा ' राजा सलहेस ' पर आधारित)

अश्विनी कुमार आलोक

एक

समय : प्रातःकाल

ध्वनि निर्देश : कम ऊंचाई के झरने से पानी गिरना। पक्षियों का गान। कर्णप्रिय धुन के बीच पारंपरिक गीत ' बेरि बेरि अंखियां कमलमुख हेरलहुं - - - ।"

मायावती : (साश्चर्य, चहकती हुई) अरे! कितना मनोरम वातावरण है। ये पहाड़, पहाड़ के पीछे उदीयमान सूर्य की किरणें,जैसे कोई नवयौवना ब्याह के बाद पहली बार ससुराल में पालकी से उतर रही हो। हरे छतनार पेड़, लुभावने फूलों से निकलकर हवा में पसर रही भीनी-भीनी गंध। फुदकती हुई रंग - बिरंगी चिड़ियां , ये हवा का मंगलगान। इस धरती का तो रूप - यौवन ही अनमोल है।अहा! जी करता है स्वर्गलोक छोड़कर यहीं अपनी कुटिया बना लूं। (हंसती हुई) देवताओं और गंधर्वों को स्वर्गलोक पर मिथ्या ही अभिमान है। वास्तविक राग - विलास तो नेपाल की तराई में बसे इस महिसौथा गांव में है। कितना शुभ मुहूर्त है! तनिक इन मखमली घासों पर विचर तो लूं। (स्त्री के चलने से निकलनेवाली पाज़ेब की ध्वनि थोड़ी देर तक आती रहती है , धीमी ध्वनि में बजनेवाली लोकधुन ' बेरि बेरि अंखियां कमलमुख हेरलहुं ' तेज हो जाती है ।)

मायावती : अहा! यह निर्भीक पवन! यह निश्चिंत आत्मीयता! (साश्चर्य) अरे! उस पर्णकुटी के सामने कौन बैठा है ? जरा चलकर देखूं तो! (स्त्री के चलने से निकलने वाली पाजेब ध्वनि तेज, निकट होता लोकसंगीत)।

मायावती : (साश्चर्य) अहा! कितना मनोहर पुरुष है। ओह!पुष्ट बांहें।ओह! कितना सुदर्शन! काम्य! कौन है,यह। (पुकारती हुई) ओ, युवक! जागो।समाधि तोड़ो। तुम्हारी तपस्या का वांछित वर तुम्हारे सामने खड़ा है। देखो,तो। नहीं उठोगे ? इन पुष्पों को तोड़कर तुम्हारे वक्षस्थल पर फेंकूंगी,तो जगोगे? (फूल तोड़कर वक्षस्थल पर फेंकने का संकेत, किलकारी भरती हुई) यह लो ! हे ! यह लो ! अब खुल रहे हैं, तुम्हारे नेत्र।

वाक् मुनि : (सकोप) धृष्ट बालिका! कौन हो , तुम जिसने मेरी तपस्या भंग की?

मायावती : अरे, तनिक धीरे तो बोलो। मैं स्वर्गलोक की अप्सरा मायावती, भुवन विहार को निकली हूं। मेरा सौंदर्य देखो। तुम्हारे कोप से इनमें खराश नहीं आयेगी! (किलक)

वाक् मुनि : विवेकहीन स्त्री! मैं वाक् मुनि हूं। तुमने मेरी बारह वर्षों की तपस्या भंग कर दी है। मैं तुम्हें शाप देता हूं कि तुम इसी भुवन पर भटकती रह जाओ।

मायावती : (रुदन) मैंने तुम्हारी कामना की, तुमने मुझे शाप दे दिया!(रुदन) मैं स्वर्गलोक की निश्छल बाला, मैं क्या जानूं, तुम कितने वर्षों से बैठे थे।

वाक् मुनि : (द्रवित)ओह !! बालिके! मुझसे भूल हो गयी। अपनी तपदृष्टि से अब देखा,तो पता चला कि ईश्वर ने तुम्हें मेरे लिए ही भेजा है। लेकिन इस जन्म में नहीं ।अगले जन्म में तुम्हारा नाम मन्दोदरी होगा और मेरा सोमदेव। मैं तुम्हारा पति बनूंगा। पुरइन पात पर तुम्हें नन्हा बालक मिलेगा , वे होंगे महिसौथा के कल्याण के लिए जन्मे लोकदेव महाबली सलहेस ,जिनकी

कीर्तिगाथा जयवर्द्धन सलहेस के नाम से गायी जायेगी। उनके भाई मोतीराम , बुधेसर और बहन बनसप्ती का जन्म होगा। इस प्रकार तुम्हारी अभिलाषा भी पूर्ण होगी और जन्म का हेतु भी पूरा हो जायेगा।

मायावती : (रुदन की ध्वनि धीमी हुई) जैसा दीनानाथ चाहें। किसी पुरुष की कामना करना किसी स्त्री का पाप नहीं। मैं प्रतीक्षा करूंगी।

(लोकसंगीत की मंद हुई ध्वनि फिर तीव्र हुई।)

अश्विनी कुमार आलोक

युवा पीढ़ी के ऊर्जस्वी लेखक और कवि। उपन्यास, लघुकथा, लोक साहित्य, समालोचना, कविता की चार दर्जन पुस्तकें प्रकाशित। विविध सम्मानों से सम्मानित। दो दर्जन पत्र – पत्रिकाओं का संपादन। हिंदी, बज्जिका और मैथिली में लेखन।

संपर्क : विद्यालय अध्यापक (11-12) उच्च माध्यमिक विद्यालय, बसुआ, सिंघिया, समस्तीपुर।

दो

स्थान : महुरावन में देवी दुर्गा का मंदिर।

ध्वनि निर्देश : मद्धिम स्वर में मंत्र ध्वनि,घंटा ध्वनि।

सलहेस : (स्वगत, प्रसन्नता और आश्चर्यपूर्वक)। ओह! प्रतिदिन इसे देखता हूं।ऐसी रूपवती तीनों लोकों में शायद ही कोई होगी। लगता है, स्वर्गलोक का समस्त ऐश्वर्य इसी में समाहित हो गया है। कौन है यह?

फूलवंती : (अपने-आप से) महुरावन से लेकर मानिकदह तक सिर्फ एक ही नाम सलहेस। अद्भुत पौरुष।हे ईश्वर!यही तो है मेरा काम्य पुरुष। मैं इसे प्रतिदिन देखती हूं,पर मन की बात कह नहीं पाती। हे देवी दुर्गा!आपकी पूजा का प्रसाद क्या सलहेस नहीं हो सकता!यह पुरुष मुझे चाहिए,माता! मैं प्रतिदिन आपके लिए हार गूंथकर लाती हूं। एक हार सलहेस के लिए भी लाती हूं। परंतु उसे देने का साहस कहां से लाऊं!

सलहेस : सुनो! कौन हो तुम? मैं सलहेस हूं,महिसौथा के राजा सोमदेव का ज्येष्ठ पुत्र।

फूलवंती : मैं तुम्हें जानती हूं। यह भी जानती हूं कि तुम इसी मानिकदह में रानी मंदोदरी को पुरैन पात पर बहते हुए मिले थे। तुम सामान्य पुरुष नहीं हो, सलहेस! तुम अजन्मा हो। तुम्हें ईश्वर ने किसी विशेष कार्य से धरती पर भेजा है।

सलहेस : मुझे मेरे जीवन का लक्ष्य पता है, सुंदरी! तुम्हारा रूप,तुम्हारा प्रणय।

फूलवंती : बिना परिचय के?

सलहेस : तुम चाहे जो कोई भी हो,मेरी हो।

फूलवंती : मैं मोरंग के राजा हिमपति और रानी दुखी की सात पुत्रियों में एक हूं, फूलवंती।

सलहेस : ओह!मोरंग की सभी स्त्रियां जादूगरनियां होती हैं!

फूलवंती: (हर्षित) आओ न,महुरावन में। मैं तुम्हारे लिए प्रतिदिन हार गूंथकर लाती हूं।

सलहेस : (हर्षित) हाय! कैसा सम्मोहन! मेरे पांव तो तुम्हारे अनुगामी होकर रह गये हैं।

फूलवंती : (हंसी)

सलहेस : (हंसी)

तीन

स्थान : महुरावन

ध्वनि निर्देश: पक्षियों की चहचहाहट, मद्धिम स्वर में लोकसंगीत। सलहेस फूलवंती की गोद में सिर रखकर लेटा हुआ है।

फूलवंती : सुनो, हमारे विवाह के लिए तुम्हारे पिता राजा सोमदेव मान जायेंगे न?

सलहेस : मुझे तो लगता है,मेरे पिता हमारी भावनाओं को समझेंगे। फूलवंती! क्या तुम्हारे पिता हमें मिलने देंगे।

फूलवंती : मैं तो तुम्हारे गले का हार हूं, प्रिय! तुम्हारे गले में पड़ी रहूंगी।

सलहेस : मैं भी तुम्हारे बिना न रहूंगा।

फूलवंती : यदि मेरे भाग्य में तुम न हुए,तो इसी सोनखरी के गाछ पर हर युग में खिलूंगी माला बनकर। मुझे अपने गले से उतारना नहीं!

सलहेस : ओह! अवश्य। (संगीत ध्वनि)

चार

ध्वनि निर्देश : दूर से निकट आ रही हाथी - घोड़ों की टाप ध्वनि,बार - बार सुनाई दे रहा कोरस ' जयवर्द्धन सलहेस की जय ' , ' भाई मोतीराम की जय ' , ' भांजे करिकन्हा की जय ' , ' गढ़ महिसौथा की जय ' , ' देवी दुर्गा की जय ' , ' महाराज सोमदेव की जय ' , ' महारानी मंदोदरी की जय '।

सोमदेव : (विश्राम गृह में लेटे हुए) सुन रही हो न, महारानी!हमारी प्रजा हमारे बेटों की कितनी जय-जयकार कर रही है!

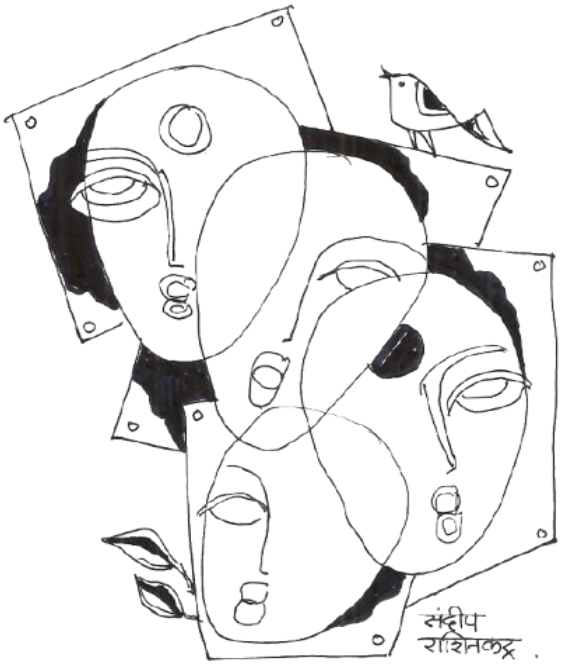

मंदोदरी : हां, महाराज! अपने तीनों पुत्रों सलहेस, मोतीराम और बुधेसर एवं दौहित्र करिकन्हा की वीरता की अनेक कथाएं कहीं सुनी जा रही हैं। सुन - सुनकर मेरा मन गदगद होता रहता है।सलहेस की जनकल्याण की भावना देखकर गढ़ महिसौथा में उसका नया नाम जयवर्द्धन गूंज रहा है। उसने अपना गढ़ महिसौथा चौदह कोस में विस्तृत कर लिया। लेकिन इससे भी बड़ी बात है कि वह दिन किसी न किसी शोषित - पीड़ित परिवार की रक्षा के लिए व्यतीत करता है।वह न्याय और सहिष्णुता के लिए जाना जाता है।

मंदोदरी : उसकी वीरतापूर्ण गाथाएं तो बहुत गायी जा रही हैं। अनेक बालिकाएं उससे प्रेम भी करने लगी होंगी। लेकिन आप शायद भूल गये हैं कि हमने बराटपुर के राजा बराट को वचन दे रखा है।

सोमदेव: नहीं,महारानी! मुझे अपने वचन का स्मरण है। हमने राजा बराट की पुत्री सामरमती और सलहेस का विवाह उनके बचपन ही में तय कर दिया था।

मंदोदरी: तो अब विवाह का समय हो चला है।

सोमदेव : (हर्षित) हमने राजा बराट के यहां विवाह प्रस्ताव लेकर चंदेसर नाई को भेजा है। अब तो मंगलगान की तैयारी करो।हम विवाह के बाद सलहेस को राजकाज तुरंत सौंप देंगे।

मंदोदरी : (हर्षित) अवश्य।मेरे मन में तो न जाने कितने फूल एक साथ खिले हुए हैं।

(सेविका का प्रवेश)

सेविका : महाराज की जय हो। एक संवादी कोई सूचना लेकर आया है।

सोमदेव : भेज दो।

संवादी : (प्रवेश करते हुए) महाराज सोमदेव की जय हो! एक आवश्यक सूचना है महाराज!गढ़ महिसौथा से जयवर्द्धन सलहेस का विवाह प्रस्ताव लेकर बराटपुर गये चंदेसर नाई को राजा बराट ने बंदी बना लिया है। समय के अभाव के कारण महाराज से बिना पूछे ही छोटे राजकुमार मोतीराम भांजे करिकन्हा के साथ बराटपुर कूच कर गये हैं।उनके साथ कुछ सैनिक भी गये हैं।

सोमदेव : (साश्चर्य) अरे!

मंदोदरी : लेकिन यह विवाह तो पहले से तय है। बराट की पुत्री ने तो सलहेस को छोड़कर किसी और से विवाह न करने का व्रत भी ले रखा है।

संवादी: पता चला है,महारानी!कि भूटान देश के राजा सुजान बराट कन्या से विवाह करना चाहते हैं। सुजान के भय से राजा बराट ने पूर्व निर्धारित संबंध तोड़ दिया है।

सोमदेव : हूं ! विवाह तो उसी से होगा , रानी मंदोदरी! चिंता की बात नहीं।

पांच

स्थान : महिसौथा का राजगृह

(मोतीराम का प्रवेश)

मोतीराम : पिता जी और माता जी को प्रणाम। राजा बराट ने भाई सलहेस के साथ अपनी पुत्री सामरमती का विवाह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है।

> राजा सुजान ने चेतावनी भेजी है। उन्होंने कहा है कि वे बराट कन्या सामरमती से विवाह करना चाहते हैं। राजकुमार सलहेस का विवाह सामरमती से तय होने से वह नाराज हैं। उनकी सेना ने चढ़ाई कर दी है। कहा है कि यदि विवाह प्रस्ताव वापस ले लिया जायेगा,तो उनकी सेना वापस हो जायेगी।

सोमदेव : (सहर्ष) मेरा पूरा विश्वास था।

मंदोदरी : (सहर्ष) अब संपूर्ण गढ़ महिसौथा में आनंद ही आनंद होगा। समस्त जनों को यह सुखद सूचना दे दी जाये।

मोतीराम : गढ़ महिसौथा की सेना के आगे बराट की सेना न टिक सकी।

सोमदेव : (हर्षित) यह गौरव गीत चारों तरफ गाया जाये।अहा!

छह

(महिसौथा का राज दरबार)

द्वारपाल : (लोकवाद्य सिंहा की तेज ध्वनि) सुनें, सुनें, सुनें। गढ़ महिसौथा के प्रजापालक,न्याय और अधिकार रक्षा के पुरोधा राजा सोमदेव और रानी मंदोदरी पधार रहे हैं।

(राजा सोमदेव की पदध्वनि)

सोमदेव : सभी सभासद!सेनापति! मैं महिसौथा का राजा सोमदेव आज इस सभा में एक आह्लादकारी घोषणा करना चाहता हूं।

महामंत्री : राजा की जय हो।महाराज की कीर्तिकथा चारों ओर सौभाग्य बिखेर रही है।आज का शुभ दिन महाराज की घोषणा की प्रतीक्षा कर रहा है।

सोमदेव : मंगलमय घोषणा राजलक्ष्मी महारानी मंदोदरी करेंगी।

महामंत्री : महारानी की जय।

मंदोदरी : प्रिय सभासदो! राजकाज में आपके सहयोग का अनन्य महत्त्व है। हमारे तीन पुत्र जयवर्द्धन सलहेस, मोतीराम और बुधेसर इस महिसौथा के कल्याण के लिए कृत संकल्प हैं।

पुत्री बनसप्ती सतखोलिया के राजा शैल से विवाहित होकर गृहस्थ जीवन व्यतीत कर रही है। उसके पुत्र और हमारे दौहित्र करिकन्हा की वीरता अल्प आयु ही में चर्चित हो रही है। अब सलहेस का विवाह होना चाहिए। हमने बराटपुर के राजा बराट को विवाह प्रस्ताव भेजा था। बराट की पुत्री सामरमती से सलहेस का विवाह पहले ही से तय है। विवाह के बाद सलहेस का राज्याभिषेक भी होगा।

महामंत्री : यह तो परम आह्लादक सूचना है। महाराज की जय।

सभी सभासद : जय जय हो, जय जय हो।

संवादी : (प्रवेश) महाराज की जय हो! एक सूचना है, महाराज!

सोमदेव : कहो।

संवादी एक : भूटान के राजा सुजान की सेना गढ़ महिसौथा के दक्षिणी पश्चिमी भूभाग से होकर आगे बढ़ रही है।जान पड़ता है कि उन्होंने चढ़ाई कर दी है।

संवादी दो: महाराज : राजा सुजान ने चेतावनी भेजी है। उन्होंने कहा है कि वे बराट कन्या सामरमती से विवाह करना चाहते हैं। राजकुमार सलहेस का विवाह सामरमती से तय होने से वह नाराज हैं। उनकी सेना ने चढ़ाई कर दी है। कहा है कि यदि विवाह प्रस्ताव वापस ले लिया जायेगा,तो उनकी सेना वापस हो जायेगी।

सोमदेव : (उत्तेजित) असंभव।सामरधनी का विवाह हमारे पुत्र सलहेस ही से होगा। सेनापति! सलहेस,बुधेसर, मोतीराम और करिकन्हा वेलकागढ़ की पहाड़ियों पर युद्धाभ्यास कर रहे हैं। उन्हें सूचना दी जाये।इस बीच हम स्वयं आगे बढ़कर राजा सुजान का मान मर्दन करेंगे। सेना को कूच करने का आदेश दिया जाये।जय दुर्गे!

सभी सभासद : जय दुर्गे ! (दुंदुंभि नाद)

सात

स्थान : रणक्षेत्र।

ध्वनि निर्देश : कोलाहल। तलवारों की आवाजें। घोड़े और हाथियों की आवाजें।

राजा सुजान : (अट्टहास) अब कितने वार सहेंगे , वृद्ध राजन् सोमदेव! पराजय स्वीकार लें।

सोमदेव : सुजान! अपनी दुर्गति की कल्पना करो। लो, संभालो।

(तलवार युद्ध)

सोमदेव : (चित्कार) आह!

सुजान : (अट्टहास) मानिकदह में रक्तपात से पहले मैंने आपको चेतावनी दी थी। आप नहीं मानें। लीजिए,मरिए सोमदेव!

सलहेस : (दूर से ललकार) सुजान!

सुजान : (अट्टहास) ओ , सलहेस! तुम्हारी ही प्रतीक्षा थी। साथ में और किन्हें ले आये? बुधेसर, मोतीराम और करिकन्हा!आओ,आओ।आज महिसौथा के समूल विनाश का मुहूर्त है। अब तो महिसौथा भी हमारा और सामरमती भी हमारी।

सोमदेव : (पीड़ा से व्यग्र) आह!

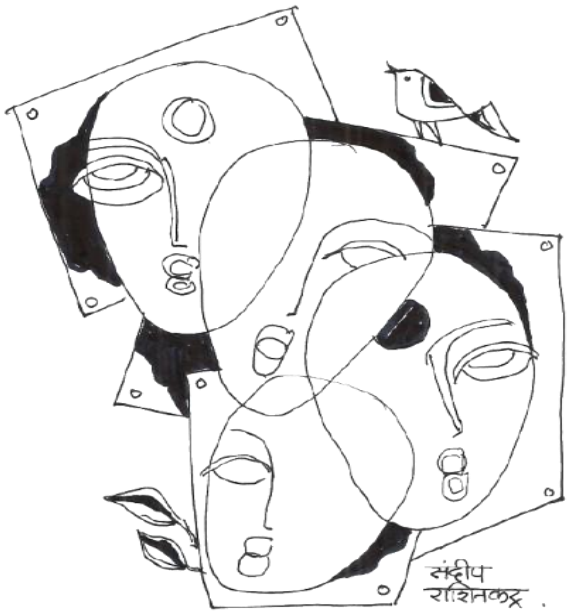

सलहेस : पिताजी! मोतीराम! तुमलोग पिताजी को यहां से निआलो। मैं अकेले सुजान को धूल चटाने के लिए पर्याप्त हूं। यह ले , सुजान!

सुजान : (अट्टहास) आओ! आओ! बच्चे!

(तलवार युद्ध)

सुजान : (चित्कार) आह! आह!

सलहेस : सुनो, सैनिको ! तुम्हारे राजा सुजान का सिर धड़ से अलग हो गया है।अब युद्ध बंद करो।

कोरस : जयवर्द्धन सलहेस की जय हो,गढ़ महिसौथा की जय हो।

आठ

स्थान : गढ़ महिसौथा का राज दरबार।

ध्वनि निर्देश: विवाह की तैयारी और मंगल गान।

मोतीराम : पिताजी! राजा सुजान वध के पश्चात भी भैया सलहेस और बराटकन्या सामरमती के विवाह में विघ्न है। देवी दुर्गा ने मुझे स्वप्न दिया है मोरंग के राजा हिमपति और उनकी पत्नी दुःखी मालिन की सात बेटियां महुरावन में हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं। पांचों मालिन बेटियां तंत्र साधना जानती हैं। उनमें से एक फूलवंती भैया सलहेस से विवाह करना चाहती हैं।

सोमदेव : पुत्र!सलहेस का विवाह सामरमती ही से होगा। यदि महुरावन का रास्ता निरापद नहीं,तो बारात दूसरे रास्ते से ले चलो।

बुधेसर : (प्रवेश,व्यग्र) : भाई! भौरानंद हाथी का हौदा खाली है। बारात तैयार है।पता नहीं, सलहेस किधर लुप्त हो गये।

मोतीराम : ओह! मालिन बहनें यहां से भैया को उठा ले गयीं। (थोड़ी देर बाद) देवी दुर्गा ने संकेत किया है कि मालिन बहनों ने सलहेस और करिकन्हा दोनों का अपहरण कर लिया है। उन्हें सुग्गा बनाकर महुरावन में रखा है। बुधेसर! तुम बारात ले चलने की तैयारी करो, मैं उन्हें छुड़ा लाऊंगा।

> उसका विवाह तुम्हारे प्रेम से पूर्व सामरमती से तय हो चुका था। परंतु तुमसे अलग भी नहीं रहेगा। मैंने उसे उसके प्रिय तोते हीरामन के माध्यम से आदेश भेजा है। परबा पोखर में कल वह स्नान को आयेगा,पानी में नौ मन सिंदूर घोल जायेगा। तुम उसमें स्नान करना। इस प्रकार तुम उससे विवाह कर सकती हो।

नौ

स्थान : बराटपुर

ध्वनि निर्देश : विवाह का मंगल गान।शोर। स्त्रियों की आपसी वार्ता। लोकधुन।

मोतीराम : भैया, सलहेस! मैं मालिन बहनों से बहुत मुश्किल से आपको छुड़ा कर लाया हूं। देवी दुर्गा ने संकेत दिया है कि मालिन बहनें व्रत कर चुकी हैं,वे अपनी बहन फूलवंती से आपका विवाह करवाकर ही मानेंगी। सावधान रहिएगा।

सलहेस : चिंता न करो, मोतीराम! लेकिन फूलवंती को तो मैंने भी वचन दे रखा है।

मोतीराम : पिता के वचन के सामने पुत्र का वचन मूल्यहीन हो जाते हैं,भाई! आइए, विवाह मंडप आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

(विवाह की संगीत ध्वनि,मंत्र आदि।)

दस

फूलवंती : हे देवि! दुर्गा हे! मैंने बार बार आपकी भक्ति की। शिलानाथ को पूजा,शीलवती को पूजा। मैंने धनुषा जाकर धनुष की पूजा की,

ऽरविवार - शनिवार को व्रत टेके,तुलसी गाछ में जल दिया। जनकपुर जाकर पंद्रह दिन परिक्रमा की,जानकी की पूजा की। मेरे पिया सलहेस ने मुझे दर्शन तक नहीं दिये।

देवी दुर्गा : (आकाशवाणी) : सलहेस ने जो तुम्हें वचन दिया है,वह भूला नहीं। फूलवंती! सामरमती से विवाह के बाद भी उसके हृदय में तुम्हारा स्थान कम न हुआ । उसने तुम्हारे वियोग में महिसौथा छोड़ दिया,इन दिनों उत्तराखंड में राजा भीमसेन के यहां है। वहीं दिन भर कदम्ब के पेड़ पर तुम्हारे वियोग में बांसुरी बजाता रहता है।सुनो, पुत्री! वह इस जीवन में तुमसे विवाह नहीं कर सकता। उसका विवाह तुम्हारे प्रेम से पूर्व सामरमती से तय हो चुका था। परंतु तुमसे अलग भी नहीं रहेगा। मैंने उसे उसके प्रिय तोते हीरामन के माध्यम से आदेश भेजा है। परबा पोखर में कल वह स्नान को आयेगा,पानी में नौ मन सिंदूर घोल जायेगा। तुम उसमें स्नान करना। इस प्रकार तुम उससे विवाह कर सकती हो।

फूलवंती : माता! मैं अवश्य स्नान करने जाऊंगी। परंतु, मैं अपने सलहेस को सदेह प्राप्त करने के लिए युगों तक तपस्या करूंगी।(रुदन) मैं सोनखरी के गाछ पर माला बनकर खिलती रहूंगी,मेरे सलहेस ने मुझे वचन दिया था कि वह मुझे अपने गले से अलग नहीं करेगा।

(करुण ध्वनि)

समाप्त

दस दोहे

राम किशोर पाठक

मधुर सरस वाणी सहज, रख-कर सुंदर सोच ।
व्यक्त करें शुभ भाव नित, भरे न जो उत्कोच ।।

वाणी से चित भाव का, होता सदा प्रवाह ।
शब्द अग्नि सम दे नहीं, जो देता हो दाह ।।

करता वाणी जब श्रवण, अंतस गढ़े विचार ।
मिलते जैसे शब्द हैं, वैसा हो व्यवहार ।।

वाणी मुखरित प्रिय श्रवण, मृदुलित उच्च विचार ।
शब्द सदा प्रेषित करें, कैसा है व्यवहार ।।

वाणी बोले जो मधुर, करते हैं सब प्यार ।
तीखी बोली तो सहज, कर देती तकरार ।।

राम किशोर पाठक
छंदकार व संपादक ।
निरंतर लेखन ।
संपर्क : प्रधान शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय
कालीगंज उत्तरटोला,
बिहटा, पटना

वाणी तीखी शत्रु सम, करें सदा नुकसान ।
फिर भी कुछ हैं बोलते, कटुता भरी जुबान ।।

वाणी वह अनमोल है, छलके जिसमें प्रीत ।
होता आनंदित श्रवण, जैसे मधुरस गीत ।।

आओ बोलें हम सरस, जैसे सब परिवार ।
परिजन हर्षित भी रहे, बने पराया यार ।।

हृदय तराजू तौलकर, लिए होंठ मुस्कान ।
वाणी नि:सृत जो किया, वह पाया सम्मान ।।

वाणी सबसे बोलिये, हर-पल सुंदर सत्य ।
मन को जो शीतल करे, सन्मुख रखकर तथ्य

प्रेम की लेखनी से स्त्री के अंतरंग संसार की कहानी

सुरेन्द्र रघुवंशी

कहवा घर (कविता संकलन), कवयित्री - सीमा संगसार
प्रकाशक- अभिधा प्रकाशन, रामदयालुनगर, मुजफ्फरपुर
ISBN - 978-81-949379-0-6, मूल्य : ₹ 200.00

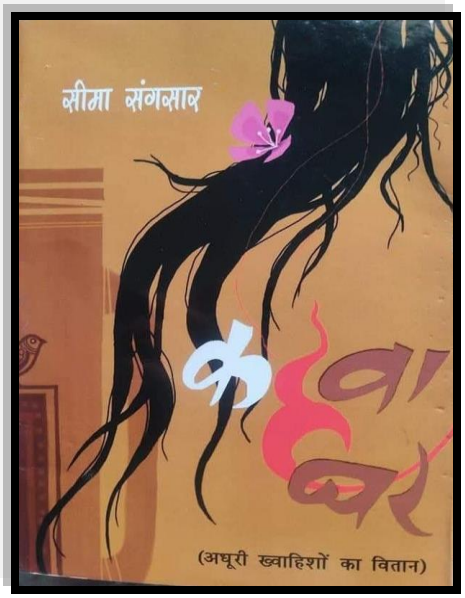

'कहवा घर' कवयित्री सीमा संगसार का दूसरा कविता संग्रह है, जिसके अंत में कुछ नोट्स भी हैं। इस संग्रह में सम्पूर्ण कविताएं स्त्री पर केंद्रित कविताएं हैं। इस संग्रह को तीन भागों में बांटा जा सकता है। पूर्वार्द्ध में स्त्री विमर्श की प्रतिरोध से लैस कविताएं , मध्य में प्रेम कविताएं और उत्तरार्द्ध में कुछ डायरी नुमा नोट्स हैं।

सीमा संगसार की कविताओं में एक स्त्री के घर संसार की सी दिखती कविताओं में एक ज़रूरी अतिक्रमण है जो स्त्री विमर्श को रेखांकित करता है। स्त्री सदियों से पुरुष के सामंतवादी व्यवहार और सोच से दमित होती आई है। कवयित्री सीमा संगसार अब और सहने से साफ़ इन्कार करती हैं। वह खुद पर थोपे गए प्रतिबंधों के प्रति विद्रोही और मुखर हैं ।हवा की तरह स्त्री को प्रवाहित होने से नहीं रोका जा सकता -

" दरवाज़े बन्द हों तो क्या
खुली खिड़कियों से
ताज़ी हवा के झोंके
अन्दर आ ही जाते हैं"

कवयित्री अपने /स्त्री के पास आत्मरक्षा के सारे उपकरण चाहती हैं -

" सुनो लड़की !
तुम्हें होना था नागफ़नी
जिसे छूते ही
लहूलुहान हो जाए इंसान"

सबरीमाला मन्दिर में स्त्रियों के प्रवेश पर रोक से आक्रोशित कविता उल्लेखनीय है । यहां उसी स्त्री को अपवित्र मानकर मंदिर में प्रवेश से वर्जित किया गया, जो सारी सृष्टि की सर्जक है। पिरियड्स के दौरान भी उससे यही भेदभाव सदियों से किया गया। यहां तक कि इस दौरान किचिन में उसे प्रवेश से वंचित किया गया। इस पाखंड को गरियाते हुए यह कविता दृष्टव्य है-

" अय्यप्पा तुम कौन हो?

.... तुम उसी गर्भ से जन्मे हो
जिस गर्भ में एक रजस्वला स्त्री
रखती है नों महीने
रुधिर से सनी कोख में"

यह समय स्त्री स्वातंत्र्य का अपेक्षित समय है। बहुत हुए स्त्री पर बंधन। अब उसे वर्जनाओं के तमाम खूँटों को उखाड़कर मुक्त हो जाना चाहिए। 'चालीस पार की औरतें'

" बंधे हुए खूंटे तोड़कर
बहने लगती हैं
निर्बाध नदी की तरह
मानो मुक्ति मिल गई हो"

स्त्री को स्वतंत्र व्यक्ति की तरह नहीं बल्कि एक मांसल कामुक देह की तरह देखा जाकर उस पर पुरुष द्वारा यौनिक हमले होते आये हैं। यहां आकर विकास का सारा गणित पाखंड से ज्यादा नहीं। गुफाओं और पर्वतों के लिए लालायित पुरुष न सिर्फ़ स्त्री पर जबरन यौन हमले करता है बरन कई मामलों में उसकी हत्या तक कर दी जाती है। यहां पुरुष एक हैवान से ज्यादा कुछ नहीं।स्त्री की देह ही पुरुष के निशाने पर रहती आई है केवल अपनी यौनिकता अर्थात जेंडर के कारण ही स्त्री असुरक्षित है। यह मनुष्यता और सभ्यता पर सबसे बड़ा कलंक है। जबकि स्त्री देह भी स्त्री की स्वाभाविक और प्राकृतिक दैहिक संरचना है। जैसी पुरुष की अपनी दैहिक संरचना है। कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाए तो स्त्री तो पुरुष की लैंगिकता के चलते पुरुष के प्रति यौन अपराधी या लैंगिक हमलावर नहीं हुई-

" कि स्त्री बनी ही हैं
अपनी देह नुचवाने के लिए
किसी रोहू की तरह "

स्त्री को समझने के लिए उसके हृदय तल में भीतर तक उतरना ज़रूरी है। उसे प्रेम और समर्पण अथवा आदर के मार्ग से ही समझा जा सकता है। वरना एक छत के नीचें आजीवन अपनी पत्नी के साथ रहने वाला पति भी अपनी सामंती सोच के चलते पत्नी को न तो समझ सकता और न ही उसे हृदय से प्राप्त करता है। देह से इतर स्त्री के मन में स्थान बनाकर ही उसे उसका साहचर्य और आत्मीय सान्निध्य पाया जा सकता है। यह उसके प्रेम का रास्ता भी है।

" सिंधु नदी की विरासत हैं स्त्रियां
जिसकी जितनी खुदाई करो
उतनी ही दुर्लभ
प्रस्तर मूर्तियां निकलेंगी
प्राचीन धरोहर की तरह"

स्त्री दैहिक आधार पर ही बार-बार कसौटी पर कसी गई।उसकी स्त्री यौनिकता को ही कमजोरी मानकर यहीं बार-बार प्रहार किया गया। इसमें स्वाभाविक तौर पर उसकी इच्छा या स्वीकृति को दरकिनार कर दाम्पत्य जीवन में भी अक़्सर उससे बलात्कार ही हुआ। स्त्री बाज़ार में तो सभ्यता के शुरूआती दौर से ही बैठा दी गई; खरीदने और बेचने की वस्तु के रूप में। 'क्या फ़र्क पड़ता है'-

"सज संवर के बैठी
वो औरतें
अपनी देहरी पर
करती इन्तज़ार
अपने पति या किसी ग्राहक का
क्या फ़र्क पड़ता है
देह तो एक खिलौना है
जो बिकता है
सब्जियों से भी सस्ता
सरेआम मंडी में
बंद कुंडी में
क्या फ़र्क पड़ता है"

कवयित्री और लेखिका सीमा संगसार पर सआदत हसन मंटो, इस्मत चुगताई और अमृता प्रीतम का बहुत प्रभाव है। वे अपनी कविताओं में उन्हें याद भी करती हैं और इसी संग्रह के उत्तरार्द्ध में एक चौथाई हिस्से में

संग्रहित सीमा संगसार के नोट्स/लव नोट्स/डायरियों में भी इन लेखकों और कवियों का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। मनुष्य किसी न किसी से तो प्रभावित होता ही है। यह सत्य रचनाकारों पर भी लागू होता है। सीमा संगसार के काव्य और खासकर डायरियों की भाषा में यह उल्लेखनीय नशा उत्प्रेरक की तरह काम करता है।'मंटो' -

"मेरे मंटो
तुम्हें अभी होना था
इस मुल्क में
जो एक ठंडे गोश्त में
तब्दील हो चुका है
एक पिता को नहीं मिलता है
बेटी का शिनाख़्त किया हुआ शव
कि अब कहने का वक़्त नहीं रहा
खोल दो....."

कवयित्री लड़कियों को पीरियड्स की शुरुआती पीड़ा से पूर्व परिचय कराते हुए सावधान और सचेत करती है। यहां पर चारित्रिक हमलों का उत्तर देने का साहस भरते हुए कविता अपना काम करती है। कितना विडम्बना पूर्ण है यह दुःखद यथार्थ कि लड़कियों/स्त्रियों की अस्मत पर डाका डालकर उन्हें बदनामी की गर्त में धकेलने वाली पुरुष सत्ता ही उन पर बदचलन होने का आरोप लगाती है। 'उल्टा चोर कोतवाल की डांटे' मुहावरा यहां चरितार्थ होता है। 'लडक़ी'-

"लड़की
तुम्हारी पहाड़ सी ज़िन्दगी की
यह शुरूआत है
तुम्हें गुज़रना पड़ता है
माह के उन चार दिनों की
मानसिक यातनाओं से
यह पहली परीक्षा
तुम्हें रुलाएगी ज़रूर
पर तुम्हें
इसे हंसकर पास करना होगा
कि तुम कह सको
लड़कियां बदचलन पैदा नहीं होतीं
बनाई जाती हैं।"

'प्रसव कक्ष' को दुनिया का सबसे पवित्र कक्ष कहने वाली कवयित्री ने कविता का मान ही बढ़ाया है । कविता के उच्चतर मापदंडों अथवा उपकरणों की कोई सीमा नहीं। जो कवि अनुभव के सागर में जितना गहरा गोता लगाएगा वह उतनी ही मूल्यवान कान्तियुक्त भावनाओं के नवीन मोती निकालकर लाएगा। इसीलिए हर उस कवि /कवयित्री को पढ़ा जाना चाहिए जो यह महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। न जाने कौन से कवि को न पढ़ना हमें उसके सुन्दर रचना संसार से गुज़रने का अवसर छीन ले।

हमारी आधी आबादी की ओर से इस बेहतरीन और ज़रूरी प्रश्न से आपको सहमत होना होगा; यदि हम स्वयं को मनुष्य कहते हैं तो। 'गर्भ गृह'-

" गुम्बदों के नीचे
गर्भ गृह में स्थित
ईश्वर को पूजा जाता है
लाल सिन्दूरों से पोतकर
लाल रुधिर से सना हुआ
गर्भ गृह
फ़िर अछूत क्यों ?
जहां सृजन की प्रक्रियाएं
चलती रहती हैं नोंमासा"

एक स्त्री ने अपने साथ हुए छल का प्रतिशोध इस तरह किया। कवयित्री महाभारत कालीन इतिहास से इस प्रसंग को उठाकर स्त्री के शोषण की जड़ें अतीत में भी दर्शाती है। स्त्री का दमन एक लम्बा सिलसिला है; जो इतिहास से वर्तमान तक फैला हुआ है। विकास और सभ्यता तो स्त्री के लिए एक धोखा है। खुद को पांच

पतियों के साथ साझा पत्नी बना देने का बदला पांचाली इस तरह लेती है। 'पांचाली का प्रेम'-

" सुनो पांडव !
तुमने कोई स्वांग नहीं रचा
मेरे लिए
छल तो मैंने किया
तुम्हारे साथ
आजीवन कर्ण को अंगीकार करके "

इस संग्रह के प्रेम खंड में प्रेमी को 'काफ़िर' शब्द से सम्बोधित करते हुए सीमा संगसार ने बड़ी तादात में कविताएं लिखी हैं। प्रेमी को काफ़िर प्रेम में, दुलार में, विनोद में, उत्साह के अतिरेक में ,पीड़ा में, विछोह में, नाराज़गी में या उलाहना में कहा गया यह रहस्य तो कवयित्री ही भलीभांति जानती है। पर यह है मौलिक सम्बोधन, जिसको लेकर कई कविताएं उन्होंने यहां दी हैं। इससे पूर्व सीमा संगसार के द्वारा कविता में दी गई प्रेम की परिभाषा नोट करें। 'प्रेम' -

" प्रेम
वक़्त के माथे पर अंकित
वह अंतिम चुम्बन है
जिसे देखा जा सकता है
अतीत के खंडहरों में
आलिंगम्बद्ध "

प्रेम के बहाने प्रेम और जनविरोधी समकालीन राजनैतिक नेतृत्व को गरियाती यह कविता अन्य कविताओं से अलग और जनपक्षधरता से परिपूर्ण है । 'प्रेम में वध '-

" प्रजा
बेवकूफ़ हुई जाती है
कि उसने सौंपी है गद्दी
एक अनपढ़ राजा को
प्रेम का वध करने के लिए"

इस संग्रह में प्रेम के विविध रूपों एवं संयोग और वियोग शृंगार पर कई कविताएं हैं, जिनमें प्रेम का ताप और सम्पूर्ण आवेग हैं। प्रेम जीवन का सर्वोत्तम अनुभव है। जो प्रेम विरोधी है उसे निःसंकोच मनुष्यता विरोधी कह सकते हैं। सभ्य समाज में प्रेम के लिए पर्याप्त स्पेस होना चाहिए। पर यह विडंबना ही है कि आज के समय में भी ऐसा नहीं है। लानत है ऐसे पाखंडी समाज पर जो प्रेम को कठघरे में खड़ा करे।

सीमा संगसार ने अपनी स्त्री विमर्श की कविताओं में एवं प्रेम कविताओं में तमाम सामाजिक वर्जनाओं को तोड़ा है। प्रेम का सुन्दर तरल संसार अब भी अपेक्षित है। हमें वह मिलेगा इसकी उम्मीद की जानी चाहिए। हालांकि प्रेम इतना ताक़तवर है कि किसी भी काल में उसे सामाजिक प्रतिबन्ध रोक नहीं पाए हैं। पर प्रेम अपना सम्पूर्ण नीला आकाश चाहता है।

इस किताब के 'किस्सा काफिराना ' खंड में फिर काफिर (प्रेमी) को सम्बोधित कई लव नोट्स हैं;जो पठनीय हैं। फिर कहना होगा कि यहां वही सीमा संगसार पर मंटो, इस्मत चुगताई और अमृता प्रीतम का प्रभाव है। दिल की गहराइयों से लिखे ये लव नोट्स हृदय की पृथ्वी में मौजूद प्रेम की सुन्दर दुनिया की सैर कराते हैं। यह पूरा संग्रह केवल कविताओं का होता और लव-नोट्स की पृथक एक किताब या पुस्तिका होती तो और भी अच्छा होता। खैर ! लेखिका को यह सलाह अगली किताब में काम आएगी।

सीमा संगसार की यह काव्य और गद्य यात्रा अपनी निरन्तरता में और भी विस्तृत और गहन होगी। वे हमारे समय के तमाम अन्य ज्वलन्त मुद्दों पर भी इसी आवेग के साथ लिखेंगी, यह उम्मीद की जानी चाहिए । यह भी कि उनके अगले संग्रह की कविताएं और भी आगे की कविताएं होंगीं ।

वस्तुस्थिति के विरुद्ध नारी की अस्मिता

रामेश्वर द्विवेदी

अब समय नहीं है
पानी के बाहर की नज़दीक जमीन पर
घोंघों की तरह घूमने का
न बंजर में पत्थरों के पीछे
छिपे रहने का शंख की तरह
मजबूत सांकलों को तोड़ने का समय है
गुफाओं में समाए घुटने का समय नहीं है
कछुओं जैसे
देवदार की फुनगियों से
पहाड़ की चोटियों तक उड़ आने का
मुक्तिकामी समय है ये
ये दरवाजे खोलने
जंजीरों को तोड़ने के दिन हैं
मैं दहलीज़ की लक्ष्मण रेखाएं पार करना चाहती हूँ
मैं नदियों को लाँघती समंदर तक पहुंचना चाहती हूँ
मैं समय के पंख पहन कर पहाड़ों के शीर्ष तक उड़ना चाहती हूँ
मैं संसार देखना चाहती हूँ
चाँद पर चढ़ना सितारों को सहलाना
मैं पृथ्वी के तमाम कोने आज़माना चाहती हूँ
मैं धरती ऊपर पानी की सतहों पर
किसी जादूगार की तरह
अपने पंख वाले पाँव आज़माना चाहती हूँ
मैं बंधना नहीं उड़ना चाहती हूं
मैं शुतुरमुर्ग नहीं किसी पंछी की तरह जीना चाहती हूँ
ये चिड़िया!
अपने पंख देगी?
यह सच है 'वेदना की उड़ान' का
यह लेखिका चाँदनी समर का नारी दृष्टिकोण है।

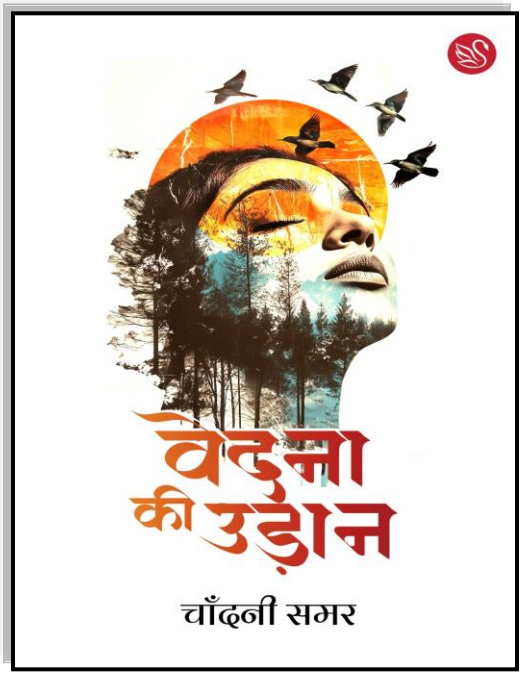

वेदना की उड़ान (उपन्यास),
लेखिका - चाँदनी समर
प्रकाशक- श्वेतवर्णा प्रकाशन,
नई दिल्ली
ISBN - 978-81-981491-1-4
मूल्य : ₹ 299.00

इस उपन्यास की सराहना इसलिए भी होनी चाहिए कि छोटी उम्र की लेखिका का उपन्यास की जटिल विधा में सुंदर संभाल है।

“वैयक्तिक दुखों के नन्हें से बादल से
कब खारा समुद्र हो जाती है कविताएँ
इसे तो शब्द भी नहीं जानते”

अथवा

मेरा रोना मचल रहा है
कहता है कुछ गाउँ
इधर गान कहता है रोना
आए तो मैं आऊं

इस उपन्यास में गुप्त जी का यह रोना अप्रत्यक्ष गान बन गया है। मैं मानता हूँ कि किसी भी रचना में किसी न किसी पात्र में लेखक अवश्य मौजूद होता है। व्यक्तिनिष्ठता का यह लोभ जिस कृति में जितना अधिक संवरित होकर वस्तुनिष्ठता में बदल जाता है वह कृक्ति उतनी श्रेष्ठ मानी जाती है। केंद्रीय पात्र पंछी बयार में अपनी आहट अनुभूत कराती हुई भी लेखिका ने वस्तुनिष्ठता का निर्वाह कर लिया है, वे साधुवाद की पात्र हैं।

यह उपन्यास ‘मुक्त करो नारी को' का आधुनिक अद्यतन संस्करण है नारी विमर्श का एक पड़ाव, स्त्री सशक्तिकरण का एक कारगर कदम विकसित अविकसित और विकासशील विश्व के लगभग सभी देशों में, सभी समाजों में नारी की जकड़न और दोयम दर्जे की नागरिकता आज तक का एक मौजूद सच है। भारत के जिस समाज का यह सच अधिक निर्मम और तर्कहीन है, उसका आभास कराए बिना चाँदनी समर ने नारी की निरुपायता से पर्दा हटाया है। पात्रों के नाम से व्यक्तित्व के गठन तक में एक ताज़गी है।

उपन्यास का वातावरण देखा-भोगा है। अतः विश्वसनीय है, शिक्षित से साक्षर तक के हर परिवार में लड़का लड़की के प्रति पक्षपाती पूर्वाग्रही रवैया हमारे समाज की एक विडंबना है-

"मोहन हाथ-पाँव धो, बैठ खाना खा
मनोरमा, तू भैया की थाली लगा
सोहन तू थक गया है अब सोने जा
रजिया जा दौड़ कर जा और भाई का बिस्तर लगा"

इस दारुण सच के प्रति लेखिका की मुखर प्रतिक्रियाएं प्रभावित करती है। अनामिका कहती है-

अपनी जगह से गिर कर कहीं के नहीं रहते हैं
केश, औरतें और नाखून
जगह। ये जगह क्या होती है
अहा! नया घर है
राम देख यह तेरा कमरा है
“और मेरा” ?
ओ पगली !
लड़कियों का कोई कमरा नहीं होता।
लड़कियां हवा, धूप, मिट्टी होती है।
उनका कोई घर नहीं होता

वेदना की उड़ान घर की इसी तलाश का उपन्यास है। वजूद की, जगह की, मान और स्वत्व की, अस्तित्व और स्पेस की छटपटाहट और तलाश का उपन्यास है, जो कहता है नारी का सम्मान ऐसे हो जैसे शगुन का, शुभमंगल का, अच्छे मुहर्त का मान होता है।

यह उपन्यास नारी की छटपटाती इच्छाओं का उपन्यास है कि उसे कोई बारह घंटे में बासी हो जाने वाले अखबार की तरह नहीं, नौकरी के लिए पढ़े जाने वाले पहले विज्ञापन की तरह पढ़े। देखे उस दूर जलती आग की तरह जो शीतलहर में देखी जाती है। स्त्री अनहद की तरह सुनी जाएं और समझी जाएँ जैसे समझी जाती है, अभी अभी सीखी हुई कोई नयी भाषा। (- अनामिका)

मित्रों के वार्तालाप से उपन्यास का प्रारंभ होता है। विश्वविद्यालय का एक सजीव वातावरण उभारता यह वार्तालाप समकाल में टेक्नोलॉजी और साहित्य के अंतर, महत्व, इनकी ज़रूरत और आज के संदर्भ में इसकी प्राथमिकता पर लौटता है। यहाँ लेखिका की

प्रतिबद्धता साहित्य के लिए गहन है और अटूट भी। मित्रों के बीच इस बहस का बीज इस पूरे उपन्यास में साहित्यजीवी नायक यथार्थ और उसके अर्थ केंद्रित पिता के बीच के दृष्टि भेद के साथ वट वृक्ष होता रहता है। अंततः पिता अपने पुत्र की सहित्यास्था और उपलब्धि के आगे हथियार डाल देते है। उसकी महत्ता मान लेते हैं।

इस पिता पुत्र के बीच की बहस, मतभिन्नता, एक प्रतीक संदर्भ है, जो दो पीढ़ियों के बीच के वैचारिक अन्तराल को पाठक के सामने लाता है। यहाँ हर पीढ़ी की अपनी सोच और दूसरी पीढ़ी से उसके टकराव का अटल सत्य उजागर होता है। यह टकराव स्वप्नदर्शी पुत्र और अर्थकेन्द्रित पिता का टकराव है। यह गैप पंछी बयार और उसकी माँ के बीच भी है।

पंछी अपने शासन में जीना चाहती है- स्वतंत्र । उसे अपने जीने में हस्तक्षेप पसंद नहीं है । वह घर के पक्षपातपूर्ण माहौल में घुटन महसूस करती है और ससुराल में इसी कुढ़न के कोहरे छांटने की कोशिश करती विक्षिप्त होती हुई मृत्यु को प्राप्त होती है।

यूं इतनी पारदर्शी, खुले विचारों वाली जिजीविषावादी लड़की की नियति यह नहीं होनी थी। उसे जकड़ वाले रिश्तों से तौबा करना था- "तआरुफ थोक हो जाय तो उसको तोड़ना बेहतर"..।

पंछी बयार डायरी लिखती है । वह उन समस्याओं पर लिखती है जो रीति रिवाजों, मुर्दा परंपराओं और पूर्वाग्रही सोच से जन्मी है और जिनका उत्तर हमें सहज नहीं मिल पाता। वह लिखती है- "माँ कहती हैं मैं और लड़कियों जैसी बिल्कुल नहीं हूँ । मैं एक नंबर की अल्हड़ हूँ। मेरा बस चले तो मैं उड़-उड़ कर सारा शहर घूम आऊँ।" अपने इन्हीं गुणों के कारण वह पाठक को याद रह जाती है, और अपनी महत्त्वाकांक्षा पर अपनी बलि देने के बाद वह हमारे भीतर किसी कशिश की तरह रह जाती है।

पंछी बयार जीवन भर मायका से पीहर तक एक विडंबना बोध जीती है। विडंबना संभवतः एक कुरूप अनफिट यथार्थ का नाम है। जिसे बदल कर फिट कर लेने में सदियों लग जाते हैं । इस उपन्यास की नायिका का आखेट इसी विडंबना के हाथों होता है।

लेखिका समाज के इसी पक्षपातपूर्ण पूर्वाग्रही रवैये के प्रति इंकार की मुद्रा में शुरू हुई है, और इसी विडंबना से टकराने का समर चाँदनी का लेखकीय उद्देश्य है। इस उद्देश्य तक पहुँचने के लिए लेखिका ने कथा को आगे बढ़ाने में पंछी बयार की डायरी का रचनात्मक उपयोग किया है। कथा को बिखरने नहीं दिया है। यह उपन्यास अपनी कथा को सीधी रेखा में लेकर चलता है । यहाँ अवान्तर कथाओं का हुजूम नहीं है। अतः पाठक को कोई परेशानी नहीं होती । वह कहती है- "मुझे पढ़ना बहुत पसंद है। उतना ही पसंद है सपने देखना, बड़ा बनने का, बड़े काम करने का। " माँ कहती है- "मैं बावली हूँ, ऐसी उटपटांग सोच मुझे शोभा नहीं देती। पर मुझे ना तो उनकी बातें समझ आती हैं, ना उनके उपदेश। माँ मुझे संस्कारी बनाना चाहती है, पर मैं स्वप्नदर्शी बनना चाहती हूँ। मैं स्वयं से बहुत प्रेम करती हूँ। एक ही तो जीवन है, इसे खुल कर जिएं। घुट-घुट कर घिस-घिस कर क्यों?

कुछ अन्य स्थल हैं, जो चाँदनी समर को नारी सशक्तिकरण की बेचैन हिमायती सिद्ध करते हैं- "ईश्वर ने ये संसार कितना सुंदर बनाया है पर जाने क्यों इसे देखने का अधिकार हम लड़कियों को नहीं" रूढ़िवादी माँ और एक स्वप्नदर्शी बेटी के बीच शीतयुद्ध पूरे उपन्यास में चलता है। यहाँ पर जेनरेशन गैप है।

चाँदनी समर ने सहित्यदर्शी के लिए अर्थ लोलुप समाज की धारणा को रेखांकित किया है । यथार्थ के पिता को साहित्य से घृणा है। अतः पुत्र को डपटते हुए कहता है- " पढ़ाई लिखाई में तो मन नहीं लगता। आवारा लड़कों की तरह कविताएं लिखता है।" याद आता है कि गुलशननंदा, कुशवाहाकांत और कर्नल रंजीत की

किताबें हम खलिहान में जमाए धान के बोझों के टाल में घुसकर छिपा कर पढ़ते थे। आज भी गाँव कस्बे में कहा जाता है-"दूर उ त कविआ गया है" यह बात इतनी हिकारत से बोली जाती है जैसे कविता लिखना लवलेस हो जाना है।

लड़कियों के बड़े होते जाने के समानांतर एक डर भी बड़ा होता है। चाँदनी चाहती है लड़की के बड़ी हो जाने पर भी डर बड़ा ना हो। समाज को ऐसा ही होना चाहिए। अतः चाँदनी ने पुरूष समाज में लड़कियों के सम्मिलित होते ही घटित छोटी-छोटी बातों पर बड़े पैनेपन और साफगोई से लिखा है। लड़कियों पर फब्तियों कसने के बेहूदा रिवाज़, उन्हें छेड़ने की आम हरकत और इस ओछेपन के कारण गहरे हद तक हर्ट होती और कभी-कभी कमज़ोर इच्छाशक्ति और दुबले आत्मविश्वास वाली घर में दबायी गयी लड़कियों के हीन भावना का शिकार होने का निर्मम सच बयान किया है।

घर में लड़कों के काम में हाथ न बटाने पर थक कर कॉलेज से लौटी लड़कियों को फिर कोल्हू के बैल से जुट जाने की व्यथा कथा भी लेखिका के भीतर एक हृदयहीन और गैरमुनासिब रवैये को रेखांकित करता है। पंछी बयार हो या यथार्थ, सभी रूढ़ियों को तोड़ने और जीवन के प्रति आधुनिक दृष्टि के हिमायती हैं। यथार्थ माँ को समझाता है कि वह उसके पिता का उगलदान होने से इंकार कर और उनकी परछाई बनने से बचें – "क्या तुम्हारे जीवन में यही एक काम रह गया है, पिताजी का जूठे बर्तन उठाना। "

तंग अंधेरी गलियों से जीवन को सुंदर रौशनी से जगमग मेला बना लेने का दिव्य सपना इस उपन्यास के पात्रों की आँखों में टहलता-घूमता रहता है। इसी सपने के अधूरे रह जाने की कशिश का नाम है- 'वेदना की उड़ान'

पंछी बयार की डायरी को चाँदनी समर ने इस कथा का मेरुदंड बनाया है। और यह वह अंकुश है, जिसने उपन्यास की कथा को बिखरने या फैलने से बचाया है। जीवन को सफल नहीं सार्थक बनाने का मुद्दा उपन्यास का मंतव्य है-

"हम सभी के जीवन का एक उद्देश्य, एक लक्ष्य होना चाहिए। यह जीवन प्रत्येक मनुष्य को एक ही बार मिलता है। परंतु कोई इसे अपने कर्मों से स्मरणशील बना लेता है, तो कोई गुमनामी के अंधेरे में खो जाता है। सार्थक जीवन तो वही होता है, जहाँ हमारे जाने के बाद भी संसार हमें सदैव याद रखे। जीवन को सार्थक बनाने की यही लालसा इस उपन्यास का प्राण-तत्त्व है।"

अन्ततः जीवन और रचना के साथ हमारा बर्ताव दोनों तरह का होना चाहिए। ज़िंदगी यदि एक झूला है, तो हमें दोनों तरह से झूलना आना चाहिए। कभी झूलते हुए हमें इस बिंदु तक पहुँचना चाहिए, जहाँ से चीजें अपनी वस्तुस्थिति में संकीर्ण और बौनी नज़र आती हैं। और कभी उस बिंदु तक भी जहाँ चीजें विराट और शाश्वत हो जाती हैं। हमें दृष्टि भी होना चाहिए और दिशा भी। अंततः यह जीवन संकीर्णता और वैराट्य के बीच एक संतुलित नियंत्रण का ही तो नाम है।

चाँदनी समर ने अपने उपन्यास 'वेदना की उड़ान' में इस संतुलन, इस नियंत्रण को जितना साधने की सफलता पायी है, वह पाठक को आश्वस्त करती है कि लेखिका सुदूर नीले पथ की झंकार तक जाएगी और अपनी सधी कलम का प्रमाण देगी।

रचनाएँ आमंत्रित

बिहार में शिक्षण कर्म से जुड़े रचनाकारों से अनुरोध है कि पत्रिका के आगामी अंक के लिए कहानी, लघुकथा, निबंध, आलेख, नाटक, साक्षात्कार, कविता, गीत, गजल, पुस्तक समीक्षा आदि

व्हाट्सऐप नंबर – 9939460183 पर भेजें।

बज्जिका कविता

आएल बसंत

आएल बसंत बाग-बगिआ फुलाएल,
अंगना में होरी के रंग छितराएल।

हंसइत सरसो के फूल घबराएल,
काहे तितली हमरा से लुभाएल।
केकरा के बरजू सम्हारू हम केकरा के,
पछिआ के झोंका भंवरा ले के आएल।
रंग-गंध-गीत के हिलोर भोर तक भेल,
एही से सरसो के फूल पिअराएल।

अमुआं के फुनगी पर बइठल कोइली
केकरा ला कुहकइते रात बिताबे।
बन-बन घुमइत बसंत रंग-रसिआ से
काहे न कोइली पीरितिआ लगाबे।
कोइली के मधुरात आबे के आशा हए,
एही से सिम्मर के फूल ललिआएल।

पसरल धरती पर सतरंगी साड़ी,
कुसुम के गोंटा तीसी के किनारी।
लबरा फगुनहटा अंचरा उड़ा देबे,
उमकल उमिरिआ उछाह मारे भारी।
करे के सिंगार धूमधाम चहुंओर मचल,
एही से गेहूंम के बाल गदराएल।

अखौरी चन्द्रशेखर

कवि, लेखक, नाटककार हिंदी और बज्जिका में लेखन। हिंदी और बज्जिका की अनेक पुरस्तकें प्रकाशित। सेवानिवृत्त सहायक शिक्षक, उच्च विद्यालय महुआ,वैशाली

उषा

पहाड़ से झांक रहल सूरूज,
गम्मे धरती पर पसर रहल।
करिआ कुच-कुच रात नुकाएल,
चांदी जइसन चमक उठल।
उषा सोहागीन के माथा पर,
चम-चम चमके टिकुली लाल।
चह-चह चिरई गीत गा रहल,
झर-झर झरना के बाजे झाल।
शीतल शीतल पवन झोंक से,
झूमइत फूल फूल इतराएल।
उषागान सुन के भंवरा से,
कली कली के मन मधुराएल।
रंग-बिरंगी तितली आएल,
फूल-बगिआ रंगीन बनल।
बिन बरखा के लागे जइसे,
सतरंगा इन्द्रधनुष तनल।
दूभी फूंनगी पर ओस बूंद,
चमक रहल मोती जइसन।
लगल बटोरे सूरूज किरण,
ई मोती अनकर धन जइसन।
उतरल सूरूज पोखरी में,
लाल सेनुरिआ लहराएल।
जइसे नएकी दुलहिन के,
मंगिआ भर सेनुर उपटाएल।
देवालय में घंटा बाजल,
पूजा-घर में दीप जरल।
स्वागत करइत नव बिहान के,
जीव-जगत गतिशील बनल।

टीचर्स ऑफ बिहार फाउंडेशन, कमल-विमल कॉम्प्लेक्स, नौबतपुर,पटना, बिहार द्वारा चार महीने पर (चौमासा) प्रकाशित। अक्षर संयोजन, साज-सज्जा और संपादन – मुकेश कुमार मृदुल
विजिट करें – www.teachersofbihar.org/karmana

SCAN ME